

ज्ञानआभूषण

जिसमें

भूत भविष्य वर्तमान इत्यादि चतुर्वर्णों के धर्म कर्म नियमादि व योग्यायोग्य बस्तुवों के निषेध बर्ताव व श्रीसच्चिदानन्द आनन्दकन्द परब्रह्म परमेश्वर के दशो अवतारों की कथा अति सुगम छन्द प्रबन्ध में वर्णित है ॥

जिसको

उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बद्रिकाग्राम निवासि पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने अतीव परिश्रम करके सर्व्वमहात्माओं व रसिकजनों के उपकारार्थ निर्मित किया ॥

दूसरीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

एप्रिल सन् १८९७ ई० ॥

५ जुज़ ३ वर्क़

इश्तहार रामायणगुटका का ॥

लखनयोगसबहीलखिलीजै ॥

विदित हो कि कलिकलुष विध्वंसिनी काव्य भाषा में जैसी रामभक्त शिरोमणि महात्मा तुलसीदासजी की है तैसी आजतक किसी कविकी हुई न होगी इसमें बहुत कथन कथनेकी आवश्यकताही नहीं अब ये गुटकारामायण जैसी कि इस यंत्रालय में मुद्रित हुई है उसकी उत्तमताका प्रभाव तो अवश्यही कथन करने का प्रयोजन है क्योंकि सम्पूर्ण भारतनिवासी अथवा और कोई खण्ड के रहनेवाले जबतक किसी पदार्थका गुण न जानेंगे तबतक उनकी रुचि उसमें होना सर्वथा असंभवही है इससे इस रामायणगुटका का गुण प्रथम तो एक यही बड़ाभारी है कि जैसी शुद्धताके साथ ये अब छपी है खरीदारों को ऐसी छोटी रामायण शुद्ध कभी प्राप्त न भई होगी कारण यह कि मालिक मतबा खुदही पहिले ही से अपने शोधकों को यह आज्ञा देरक्खी कि इसको यथारुचि से चार और पांचवार जहांतक अशुद्धताकी सम्भावनाहो तहांतक शुद्धपढ़के छपवाइये दूसरे यह कि सातकाण्ड तो सबही रामायण में होते हैं इसमें आठवां लवकुशकाण्डभी युक्त है तिसपर भी एक यंत्री क्या मानो रामायणकी मंत्रीही है जो कि श्रीसच्चिदानन्द आनन्दकन्द दशरथनन्दनकी आदिसे अन्त तक मय तिथियों के सर्व रामायण ही को ज्ञात कराती है सो भी इसी में युक्त है तिसपर भी काग़ज़ सचिक्कण श्वेत जैसी बम्बई की पसन्द कीजाती है इस रामायण गुटका में वह सब मौजूदहैं लेकिन बहुत थोड़ी छापी गई है अफ्सोस है कि जो शीघ्रता न करेंगे उनको यह प्राप्तहोना बड़ाही दुष्करहै अथवा गुटका रामायण अबकी छपी मिलेहीगी क्यों कारण यह कि ऐसी मनोहर अल्प मोलपर बिकैगी तो जो एक खरीदैगा वो चार रख छोड़ने को जरूरही लैलेगा ॥

श्रीगीतगोविन्दकाव्यम् ॥

वनमालीभट्ट कृत संजीविनी टीकोपेतम् ॥

यह गीतगोविन्द काव्य पण्डित जयदेव कृत वही है जो कि अतीव उत्तम होने

ज्ञानआभूषण की भूमिका ॥

दो० सर्व भूमि यह दुखमयी विदित सकल संसार।
विना भक्ति भगवान के लहै न कोउ निस्तार॥

हे मम प्राणप्यारे हिन्दुस्तानवासियो निज मनमें ख्यालकरके देखो तो ये अनेक अनेक प्रकार के दोष अर्थात् काम क्रोध मद लोभ मोह अहङ्कार ईर्षा तोड़ फोड़ इत्यादिक जिनके गुणोंके वर्णन करनेमें लेखनी डरयुक्त होकर हाथसे छूट २ कर गिर २ पड़ती है वोह ऐसे पराक्रमी शूरवीर गुप्तरूप से किसप्रकार बचाव करना चाहिये हां प्रत्यक्ष में कोई रूप होता तो अवश्यही कुछ प्रबन्ध इनके वश करने में किया जाता परन्तु गुप्तरूपसे कोई बुद्धि इन वैरियों के हटादेने में काम नहीं आती देखो इन्होंने कैसे बड़े बड़े राजाओंको निजवशमें फांसकर चूरचूर करदिया जिनके अब नाम लेने में भी भय प्राप्त होता है जैसे कि दुर्योधन व पौंड्रक व कंस इत्यादिकों को निज वशमें लाकर चूरही तो करदिया और युगों पर्यन्त कलङ्कीभी करदिया जिनकी कथा पुराणों में अबतक विख्यात है तिन ऐसे बली वैरियों से हम सबलोग किसतरह से बचैं बड़े कठिनता की बातहै इसलिये इनके दूरकरने के हेत मैंभी कुछ अपने ज्येष्ठ भाई पण्डित बलदेवप्रसाद शुक्ल की आज्ञानुसार व निज मत्यऽनुसार इस ज्ञानआभूषण को पद्यभाषामें प्रकट किया है इसमें चतुर्वर्ण के धर्म्म कर्म्म और सदाचार ज्ञान व श्री सच्चिदानन्द परब्रह्म परमेश्वरके दशों अवतारोंकी कथा अति मनोहर

छन्दोंसे सुशोभितकी है और सब महात्माओं से प्रार्थना करताहूं कि जो इस पुस्तक को अपने विशाल नेत्रोंसे अवलोकन करके इसका मधुररस पीवेंगे व इसके अनुसार बर्त्ताव करेंगे तो वही श्रीसच्चिदानन्द परब्रह्म परमेश्वर से आशा है कि इस जन्म में निरोगी और सुखी रहकर अन्त में अति हर्ष से वैकुण्ठ वास को प्राप्त होवेंगे ॥

(कृष्णविहारीशर्म्मा)



ज्ञानआभूषण ॥

आदिखण्ड

दो० सिद्धिकरण अशरण शरण बुद्धि राशि गुणधाम ।
विघ्नहरण मङ्गलकरण गणनायक अस नाम ॥
सो० होहु सो ममअनुकूल भक्त मनोरथ कलपतरु ।
हरहु विषमगत शूल देहु ज्ञान निर्मल सघन ॥

चौ० नन्दबबा अरु यशुमति मैया । सहितरोहिणी हलधर भैया ॥ आदि सनातन हरि वनमाली । दुष्ट विनाशन नाथनकाली ॥ यमलार्ज्जुन तारन घनश्यामा । करहु कृपा मोपर अभिरामा ॥ देहुज्ञान अति जासु प्र-भावा । रचहुं ग्रन्थ निज जनित स्वभावा ॥ आदिशक्ति मैं सुमिरौं तोहीं । सुमिरत सुलभ ज्ञानदे मोहीं ॥ अखिल लोक ब्रह्माण्ड दिगीशा । बारबार नावहुं मैं शीशा ॥ देव दनुज किन्नर मुनि जेते । सकल चराचर सिद्धक तेते ॥ नर अरु नाग पितर गन्धर्व्वा । पृथक पृथक वन्दौं मैं सर्व्वा ॥ सूर्य्य चन्द्र दिति ध्रुव सतबारा । रामभक्त श्री

पवनकुमारा॥ जो कछु भूल होहि यहिमाहीं। अनुचर जानि क्षमहु प्रभु ताहीं॥ अल्पबुद्धि अरु कथापुनीता। कैसे रचहुं शुभग यह गीता॥ होइ प्रसन्न सब पुरवहु आशा। जेहिविधि करौं ग्रन्थ परकाशा॥

दो॰ एकसमय सुमन्तुमुनि मन में कियो विचार।
देश ग्राम देखैं कछू विहरैंविपिन मँझार॥

सो॰ अस प्रण जियमें ठानि गिरिजानन्दन सुमिरकर।
गमन कियो सुखदानि हस्तिनपुर अवलोकनहिं॥

चौ॰ चलेजात मुनि सुहृद गँभीरा। विज्ञशिरोमणि अत्युतधीरा॥ हरिणछाल लियो उरमें लाई। सुन्दर गात विभूति रमाई॥ अरुणनयन अरु हृदय विशाला। कांध जनेउ हस्त शुभमाला॥ शिव शिव राम राम रट लागी। चलेजात मुनि आनँदपागी॥ देखत वन उपवन की शोभा। गुंजत चञ्चरीक मधुलोभा॥ चलत मनोहर त्रिविध बयारी। देखत छवि मुनि भये सुखारी॥ भाँति भाँतिके फूल सुहाये। नवकिशलय देखत मनभाये॥ मनहुँ वसन्त शृंगार बनाये। फूलिरहा सुन्दर सुखदाये॥ मधुर मिष्ठ सुन्दर फलभारी। ताके भार रहीं लचिडारी॥ नृत्यत मोर निकर अतिचैना। मधुर मधुर सुर बोलहिं मैना॥ गुंजत मधुपकली बिचराजैं। कोकिल वचन वाद्यसम बाजैं॥ खग मृग विहरैं वैर विहाये। नानाविधि के वेष बनाये॥

दो॰ क्रीड़त मरकट विविध विधि हाव भाव देखराय।
ज्यों खेलत हैं कला को नटबेड़िया समुदाय॥

सो॰ तरुन लता पर बैठि कूकूं कोहकैं कोकिला।

गानकरैं सुर ऐंठि काम भरी प्रीतम विरह ॥

चौ० वनशोभा कछु वरणि न जाही। जहँ वसन्त ऋतु रहत सदाही ॥ फूलैंफलैं विटप बहुभांती। वरण वरण की लागें पांती ॥ हालि उठत द्रुम पांतिन तीरा। शीतलदायक बहे समीरा ॥ विविध बेलि लपटीं तरु माहीं। फूलिरहीं बहुरंग स्वहाहीं ॥ सकल वनस्पति अति सुखदाई। शुभ्र अरुणता फूलन छाई ॥ भुंडभुंड विहरैं मृग पांती। करैं कलोलैं दिन अरु राती। सकल भूमि शोभासों छाई। चिन्तामणिसम अतिहि स्वहाई ॥ कोमल विमल शुभग अति पावन। बहु रमणीय परम हुलसावन ॥ देखि विपिन मुनि भये सुखारी। बैठे तरु तर अति तपधारी ॥ श्रास स्वास करि बहुसुख लयऊ। क्षणकमात्रमें फिरि चलिभयऊ ॥ योजन द्वैक नगरजब रह्यऊ। मुनि देखत अति हर्षित भयऊ ॥ आधकोशतक कंटक वृक्षा। बहुगम्भीर घोरभय ऋक्षा ॥

दो० भाला सम कांटा चुभे पत्र असी सम लागि।
अतिगह्वरवनदेखिमुनि कछुकीन्ह्यो अनुरागि ॥

सो० शाखा लगीं अकास लपटीं एकहि एक में।
अतिभयदायक तास भुकी अँधेरी रैनिसम ॥

चौ० लपकैं पत्र बिज्जु जिमि चमकैं। वायु प्रवेश सन्धिकै गमकैं ॥ कड़कैं लता लताकै संगम। ज्यों आपुसमें लड़ैं भुजंगम ॥ देखि मुनीश चले भयत्यागे। आधकोश तक देखा आगे ॥ महाभयंकर दुस्तरखाहीं। देखत प्राण होहिं भयमाहीं ॥ चिघरैं सिंह घोर भयकारी। हौंकैं बारण प्राण निकारी ॥ भुण्ड भुण्ड मिलि

भ्रमैं भालू । शब्द अगाध करैं जिमि कालू ॥ दौड़ैं नाग बामिको त्यागी । धुवांप्रवेश जरै जिमि आगी ॥ अबआगे का करौं बखाना । आधकोश का जेहि परमाना ॥ बड़वानल समान गहराई । जाकी थाह केउ नहिं पाई ॥ अति अगाध दुस्तर बहुभांती । भरा सलिल धारा हहराती ॥ परे मच्छ मगरादिक जीवा । कच्छ गोह जे अतिबल सीवा ॥ देखि मुनीश हर्ष अति भयऊ । आगे कोट नजरि परिगयऊ ॥

दो० चौड़ाई यककोश जेहि अर्द्धकोश उच्चान ।
सकल नगरके घेरमें दीरघगढ़ अतिजान॥

सो० विरच्यो मानोदेव अद्भुतकिला स्वहावनहि ।
पार न पावै केव चक्रवर्त्ती जे भूमिपर ॥

चौ० ठौर ठौरमें तोपैं लागी । चमकैं घाटिनमें घुड़बागी । सूर्यभ्रमक्कनि चन्द्रलपक्कनि । कालीभूरी बिज्जु दमक्कनि ॥ वायुवेग घोड़े नहे जामें । परे जँजिरहागोला तामें ॥ जाके दगत महाभयकारा । चूरचूर ह्वैजायँ पहारा ॥ लपकै बाढ़ि चीरवां केरी । ज्यों दमकै द्युति भादौं केरी ॥ लिये सिपाह वीररस जाके । जगह जगह पर पहरा ताके ॥ नङ्गी चढ़ीं सँगीनैं सोहैं । बरछी लपकि हियहि भयपोहैं ॥ फिरैंसवार ढाल अड़िआये । दुइदुइ किरच कमर लटकाये ॥ भाला तुपक कटारी लीन्हे । मानो युद्धकरन मनदीन्हे । यहिविधितें लागे सबठौरा । वाजि सवार सर्व शिरमौरा ॥ सकल देखि मुनि हिये सराही । आगे चलतभये क्षण ताही । देखी पुष्पवाटिका शोभा । देखत शुभग अतिव मनलोभा ॥

दो० आमनीय कचनार जहँ रहेफूलि छबिछाय।
भूमैं लता अशोककी मन्दपवन को पाय ॥
सो० सुंदर बहे समीर हालि उठत सबपाततरु।
करें कोकिला कीर दाख छुहारन बैठि रव ॥

चौ० कमला कुसुम अगस्त स्वहाये। जुही केंवड़ा की झरिलाये॥ जामुन लवँग कदँब मनमोहे। दाड़िम कुंद मालती सोहे॥ मेहँदी केंवड़ाकी छविछाई। नासपाति केतकी सुहाई॥ तुन कचनार कुसुम की पाती। विविधभांति पुरइनि छहराती॥ केदलिपांति घनी घहराई। मौनसिरी की अति छविछाई॥ सेमरपांति लगी बहुताई। पूरिरही जेहिकी अरुणाई॥ चम्पाबेलि निवारि विराजै। फूलि फूलि गेंदा छविछाजै॥ गुलतुर्रा गुलसब्बो फूलै। तापर बया बैठि सुख भूलै॥ गुलाबास केतकी विराजै। फूलि गुलाब अतिहि सुखछाजै॥ बेला बहँकि बहँकि रहिजावै। गुलमेहँदी गुलखैर स्वहावै॥ दुपहरिया दुपहर सम खिली। सूर्य्यमुखी लहैंकै भिल मिली॥ गुड़हर कृष्णकामता राजै। नैंनिबेटि अतिही छविछाजै॥

दो० भँडुले फूल कनेर के सुर्ख सपेदा आदि।
गुलचांदनीगुलाबकेभांतिभांतिपुष्पादि॥
सो० फूलमनोहरदेखि अतिहीमुनिहर्षितभये।
कमलाबेलिविशेखि गुंजरहेजहँभौंरगण॥

चौ० एकओर महँ बनी कियारी। तामें लटकिरहे फल भारी॥ आंब फरेंद अमलि अधिकाई। बेल बहेरन की छबिछाई॥ एला लवँग सुपारी राजै। दाख छोहा-

रनकी छविछाजे। कैथा पनस बेर अमरूता। नासपाति अँवरा सहतूता॥ फरे अँगूर निम्बु फलभारी। अखरोटन की नै रहिं डारी॥ दाख बदाम संगतरे राजें। बड़हर भूमि भूमि छविछाजें॥ सेव सरीफा किसमिस लीची। चन्दन बहँकिरहा बिच बीची॥ लटकैं फलरतालुके भारी। जिमीकन्द की बनी कियारी॥ नौरङ्गी रँगलाल देखावें। सकरकन्द रँग अरुण स्वहावें॥ गुच्छा मूंगफली के सोहैं। गुहे बदाम अधिक मनमोहैं॥ सालिम मिसरीकी गरुआई। रहे जायफल तरे लुकाई॥ जमुनिन केरि श्यामता सोहै। दाड़िम देखि देखि मनमोहै॥

दो० गुलरी फरीं अघायकर सुर्खमयी अवरेखि।
केला तरु लटके परे भरे कलिन सों पेखि॥

सो० महुवाकी टपलागि फरे बकैना हुब्बभरि।
हैकुँदुरूजिमिआगि लदे अँजीरानीमसम॥

चौ० विहँसे मुनि देखत फुलवारी। जहँ शुक शोर करैं छविभारी॥ गुंजत मधुप चहूंदिशिछाई। केलिकरैं खंजन सुखदाई॥ थिरकि थिरकि नाचत कलमोरा। कोकिल शब्दकरैं चहुंओरा॥ देखत मगचिकनी छवि छाजें। महांरिवचन बाजन जिमिबाजें॥ चींचीं कूंकूं शोर मचावैं। भ्रमर बैठि कलियन गुञ्जावें॥ पपिहा पिउपिउ की रट लागी। फिरै चकोर चकोरिनि त्यागी॥ नचैंमयूर पंख फैलाई। बायस शोर सुनो नहिं जाई॥ चातृक आशा स्वाति लगाई। बटयर तीतर रहे बराई॥ बुलबुल करचोटिया फरांवें। श्याम चिरैया शोर मचावैं॥ ललगंडी कटफोरवा राजै। बया चिरकुत्राकी गतिसाजै॥

हियेहर्ष मुनि पुलकित भये। भागिसराहि अग्रको गये॥
देखानगर विचित्र स्वहावा। पुरपैठतअतिहीसुखपावा॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणे कृष्णविहारीशुक्लबदर्का
निवासिविरचितेसुमन्तुमुनिहस्तिनापुर
गमनवर्णनोनामप्रथमोऽशः॥ १॥

दो० देखतनगरविचित्रअति हियहुलसानिमुनीश।
वर्णौं ताको भेदमें सुमिरि चरण जगदीश॥
सो० अतिहि सुहावन पूर मानो विरच्यो देवतन।
इर्दगिर्द सबशूर लिये किर्च पहरा करहिं॥

चौ० लागे फाटक चारि स्वहावन। तापैताज खिचे मनभावन॥ ताऊपर शुभबनी अटारी। तापर शूरकरैंरखवारी॥ मुनि प्रवेश भीतर को करेऊ। मंदिर देखिअतुल सुख लहेऊ॥ यक महला द्वै महला ठाढ़े। महल ते महलाते अतिबाढ़े॥ नारीचितवैं खड़ी झरोखा। करैं हास्य पुरवैं मनशोखा॥ महलन चढ़ी खड़ीअलबेली। करैं केलि अति चतुर सहेली॥ आपस माहिं गुलालउड़ावैं। रंगभरे केसरि घटनावैं॥ रँग भरि भरि लैलै पिचकारी। एकनारि यक ऊपर डारी॥ काहूनैन पर्यो रँग जाई। कर नयनन दै बहुत रिसाई॥ काहूके कुच कौनिउनारी। करि अरुपर्श भगैदै तारी॥ रंग अरुणकी कीच मचाई। रंग बैंगनी की छविछाई॥ हरारंग कलशनमहँ घोरैं।रंग जाफरी लोटन बोरैं॥ जोकाहुकपकरे धरिपावैं। छोड़ि रंग अतिखेल खेलावैं॥

दो० मचीधूम हस्तिन नगर कोकरि सकै बखान।
चले नृपतिघर मुनिविहँसि हियेसुमिरिभगवान॥

सो॰ मंदिर मांझ पुनीत अरुणरंग कहिजात नहिं।
कछु सोनहल सहीत कछुक पेराई केसरहि॥

चौ॰ पहुंचि गये द्वारेपै मुनीशा। द्वारपाल नायहु सब शीशा॥ कहौं आगमन मुनिहमपाहीं। आज्ञाभीतर जान कि नाहीं॥ बोले विहँसि मुनीश कृपाला। अति गंभीर वचन ततकाला॥ हम फकीर विहरैं वनवासी। सोहम तुमसों कहा प्रकासी॥ दरश लालसा कछु मन माहीं। ताते जात भूप के पाहीं॥ लै आवहु आज्ञा नृप केरी। शीघ्रहिजाहु करहु मतिदेरी॥ द्वारपालगो नृपति समीपा। हाथजोरि बोले सुनुभूपा॥ नाथएक तव पवँरि मुनीशा। ठाढ़ेनाम जपत जगदीशा॥ आज्ञा होहि तुरत लैआवों। अथवाहुकुम जौनुमैं पावों॥ सुनत नृपति बोले हर्षाई। जाहु अबहिं तुमदेहु पठाई॥ आरघपादसहित लैआवहु। सकल मार्ग पांवड़े बिछावहु॥ लैआज्ञा रक्षक फिरिआवा। मुनि जोहारि अस वचनसुनावा॥

दो॰ दोउ करजोरे रक्षकहि बोल्यो मुनिसों हेरि।
नाथ क्षमहु अपराध मम फेरिकहै कर जोरि॥

सो॰ तुमहिं बुलावहिं भूप मध्य सभाबैठे नृपति।
सुनि हर्षे मुनि रूप जाय सभा ठाढ़े भयो॥

चौ॰ रत्न जड़ित सिंहासन सोहै। तापै भूप बैठि मन मोहै॥ श्वेतरंगका छत्र बिराजै। ताऊपर कलँगीशुभराजै॥ ऊपर चवँर होहि गजगाही। जेहिउपमा मैं है कोउनाहीं॥ सम्मुख नग्नि धरी तरवारी। अगलबगल में लगी कटारी॥ दहिने बैठि बड़े उमराव। जेमंत्रीभूपति के चाव॥ बांयें न्यायी बैठि विराजैं। तापीछे क्षत्री

शुभराजैं॥ वंदीजनहि वेद उच्चारैं। चारण गुह्यककीर्त्ति सचारैं॥ आशा लिये सिपाही ठाढ़े। बल्लम लिय अति ही सुखबाढ़े॥ पानदान गद्दीपर सोहै। पीकनाद अतिही मनमोहै॥ मखमल बिछी भूमिपर राजै। धरत पांव अतिही सुखछाजै॥ तापै कुरसिनकी अरुणाई। सोना जड़ित विचित्र बनाई॥ लगेजमुर्रद मोतीहीरा। कहँ लग वर्णौं सुहृद अधीरा॥

दो॰ जड़ी कामकी छति लगी रहिसोने सों पूरि।
बन्दनवार विराजहीं मानों मूंगा टूरि॥

सो॰ पंखा चलै अथाह लपकैं उड़ैं गुलाबकी।
सकलसभाके माह रहा अतर घन छायकर॥

चौ॰ उठे सभासद देखि मुनीशा। बारबार नावहिं पद शीशा॥ बैठे मुनि अनुशासन पाई। प्रीति बढ़ी कछु वरणि न जाई॥ शतानीक नृपउठि हर्षाई। रहिगयो शीश भूमिमें नाई॥ सजल नयन तनु पुलकितगाता। हिये हर्ष नहिं आवहि बाता॥ बारबार नावहिं महिशीशा। भागिसराहैं मनहिं नृपीशा॥ रत्नजड़ित चौकीजहँ राजै। तापै जड़ीकाम शुभ छाजै॥ ताऊपर मुनिको बैठारी। पूजन कीन्हो विविध प्रकारी॥ जोरि हाथ अस वचन सुनाये। भयों कृतार्थ दरशके पाये॥ सकल सभामय कुटुँबसमेता। भयो निहाल दर्शके होता॥ बड़ी भाग्यकीन्ह्यों आगमना। सुन्दर दरशदिखायो अपना॥ विश्वमूर्त्ति रक्षक भूतारथ। धरे वेष विहरौ परस्वारथ॥ रामभक्त तुम परम कृपाला। दीन जानि मोहिं कियो निहाला॥

दो० सकल विश्वके हेतुतुम धरे फिरो यह भेश।
सुंदर दरश देखायकै करहु कृपा हरिक्लेश॥
सो० मुनिन शिरोमणि पाय दियोसुःखअतिमोहिंपर।
सुंदर वदन देखाय पुरवहु आशा दासकी॥
चौ० विहँसे मुनि अतिहर्षबढ़ाई। बोले वचनसुधाकी नाई॥ धर्मपाल गोरक्षकत्राता। सकल सृष्टि भूषणविख्याता॥ सर्व मण्डलीमण्डलनायक। गोद्विज ब्राह्मण क्षत्रीपालक॥ पोषण धर्म ज्ञान बलवाना। अरिहिंविनाशन सबजगजाना॥ सज्जन कीर्त्ति सुयशअतिपावन। सकल प्रजाके प्रियमन भावन॥ वंशशिरोमणि सबजग जाना। समरभूमि में सिंह समाना॥ और वंश में कहौं बखानी। जाके सुनत पापकी हानी॥ पूरब ब्रह्मा सृष्टि बनाये। दोसुत तिन अपने उपजाये॥ तिनके दक्ष अत्रि ये नामा। भे विज्ञान मोक्ष के धामा॥ दक्ष सूर्य्यवंशी कहलाये। अत्रि चन्द्रवंशी जगछाये॥ चन्द्रवंश में भयो ययाती। पांचपुत्र ताके विख्याती॥ यदु तुर्ब्बसुद्रह्यु अनु नामा। बेटा पुरु अतिहीबलधामा॥
दो० पुरु का वंश पराक्रमी भे द्वैसुत बलवान।
कौरवपांडवनामतेहिधर्योव्यासप्रियजान॥
सो० कौरव के धृतराष्ट्र तिन उपजाये शत पुरुष।
दुर्य्योधनादिकराष्ट्र चित्तसेन दुश्शासनहि॥
चौ० पाण्डव के पांडव मनमोहैं। तिनके पांचपुत्र जगसोहैं॥ अर्जुन भीमादिक सहदेवा। नकुल युधिष्ठिर अतिबल सेवा॥ इनकी कीर्ति वरणि नहिंजाई। सूक्षम भेद कहौं मैं गाई॥ भये युधिष्ठिर धर्म प्रकासा। मिथ्या

वचन करत नहिं तासा ॥ अर्ज्जुन बाणावली बखाना। हयसादी में नकुल सुजाना ॥ दश सहस्रहस्तीकर बूता। भीमसेन राखत मजबूता ॥ पंडितभे सहदेव सुजाना। ज्योतिष में दूजोनहिं आना ॥ पांचो माहिं बराबर प्री-ती। रहै सदा बरताव सहीती ॥ दुर्य्योधन कुरुवंशी राजा। यकदिन सभामाहँ शुभछाजा ॥ बोलि पठाइसि पांचौ भाई। द्यूतयुद्धका खेल बनाई ॥ होन द्यूत लाग्यो अधिकाई। लैलै पांसा देहिं चलाई ॥ राज्य नारिकी बाजी लागी। जो हारै सो जावै त्यागी ॥

दो० बारहवर्ष मियादलगि जावहि राज्यहि त्यागि।
देखि परै जो बीचमहँ पावै राज्य न मांगि ॥

सो० फेरि करै वनवास बारह वर्ष बिताय कर।
करै राज्यकी आस लगी शर्तयह दांवपर ॥

चौ० हँसिकै पांसा धर्म उठाये। किये रोष अति जोर चलाये ॥ हारि हारि सब क्षत्री बोले। दुश्शासन शकुनी मुखखोले ॥ टेरि कहै दुर्य्योधन वीरा। छोड़हु राज्य जाहु वनधीरा ॥ दुश्शासन से कहा हँकारी। ला-वहु नारि सभामहँ प्यारी ॥ आज्ञापाय तुर्त लैगयऊ। देखत छवि अति हर्षित भयऊ ॥ वस्त्र विहीन करौ यह नारी। मम जंघापै देहु बैठारी ॥ खोलत वसन दुशास-न अत्री। सभा मांझ निरखैं सब क्षत्री ॥ अतिअकुलाय द्रौपदी रानी। बोले दुखदमयी भयबानी ॥ यद्यपि ब-ली पांडु सुखकारी। धर्म विहीन करैं नहिंरारी ॥ फिर द्रौपदि विनवै जगदीशा। राखहु लज्जा मोरि सुरीशा ॥ आरत वचन सुनत गिरिधारी। प्रकटि चीरकीन्ह्यों वि-

स्तारी॥ ऐंचत चीर पारनहिं पावा। थकिदुश्शासन मनहिं लजावा॥

दो० बोला कुरुवंशी नृपति छोंड़ि द्रौपदी देहु।
पांचौ पतिन समेत तुव वनकी रस्तालेहु॥

सो० सुनत धर्म्मदुखपाय सहितद्रौपदीबन्धुसह।
चलतभयेअरगायतजिदीन्ह्योंहस्तीनगर॥

चौ० करि प्रवेश वनवेष छिपाई। बहुत दिवस विहर्यो सुखदाई॥ गये विराट पुरी अति पावन। पांचौ बन्धु समेत स्वहावन॥ रहेतहां सब वेष छिपाये। नृप विराट के भवन स्वहाये॥ बारह वर्ष बीति जब गयऊ। राज्य लेनकी इच्छा भयऊ॥ सप्त अक्षौहिणि सेना साजी। पैदलरथीहस्त अरुवाजी॥ भये सहायक कृष्ण मुरारी। पारथके सारथी विहारी॥ सुनत खबरि कुरुनंदन राजा। एकादश क्षौहिणि दल साजा॥ कुरुक्षेत्रमें सैन लगाई। यहां युधिष्ठिर फौज सजाई॥ दै डंका फेरवाय निशाना। कुरूक्षेत्रका कीन पयाना॥ विकट युद्ध भा तहँपर जाई। कटे शूरमा बल देखराई॥ घैहा उठै कराहि कराही। लोथिनपर लोथीगिरिजाही॥ रहिगयोरथीधनुषअड़ियाये। रक्तवरणसबवस्तरछाये॥

दो० दिवस अठारह युद्धभा महाघोर संग्राम।
भये पराजय कौरवा विजयीपांडव आम॥

सो० पाय विजय नृपधर्म पांचौंभाइनसहितप्रिय।
कीन्ह्यों सबका कर्म जे भारत जूझे नृपति॥

चौ० कर्मकांड कर पांचौ भाई। गये हस्तिनापुर सूखदाई॥ सुंदर घड़ी मुहूर्त्त विराजा। तादिन गद्दीबैठे

राजा॥ करैं राज्य अतिप्रजा सुखारी। गो रक्षक ब्राह्मण हितकारी॥ धर्म धुरन्धर कृपानिकेता। पांचो भ्रात सहित शुभतेता॥ नारि द्रौपदी कुन्तीमाता। गांधारी धृतराष्ट्र विख्याता॥ अब आगे का करौं बखाना। अर्जुन सुत अभिमन्यु जगजाना॥ अभिमन्यु तनय परीक्षित राजा। चक्रवर्त्तभे येमहराजा॥ यकदिन गयो अखेटसुजाना। जहँ शमीकऋषि कररहे ध्याना॥ सर्प्प मरा डाख्यो ताऊपर। ऋषिसुतदेखि शापदियो भूपर॥ जोयह सर्प्प गयो लपटाई। ताको तक्षक नाग डसाई॥ शाप पाय भूपति दुख लहेऊ। डसितक्षक नृप स्वर्गहि गयऊ॥ ताके तनय आप महराजा। सकल जक्तमा जेहि यश छाजा॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णविहारीशुक्लबदरकानिवासिविरचितेशतानीकवसुमंतुमुनिसंवादववंशानु चरित्रवर्णनोनामद्वितीयोंऽशः॥ २॥

दो॰ शतानीक पूछत भये सुनहु सुमन्तु कृपाल।
कथा कहौ अनपावनी जासे होहुँ निहाल॥

सो॰ कथापियूष समान सुनहुभूप चितलायकर।
जासुसुने कल्यान स्वर्ण मोक्ष दोऊ मिलहिं॥

चौ॰ सृष्ट्युत्पत्ति कहों मैं गाई। सुनहु भूप तुमचित्त लगाई॥ पूरुब अन्धकार देखरावै। गुण अवगुण कछु भेद न पावै॥ सकल भूतमय सूक्ष्म जितेन्द्रिय। श्रीनारायण के जिय भेदिय॥ करौं सृष्टि रचना मैं प्यारी। अस विचारि भरि दीन्ह्यों वारी॥ तामें वीर्य्य पतनप्रभु कीन्हा। सकल सृष्टितातें रचिदीन्हा॥ उग्र वीर्य्य शुक्र

रेत कहाये । वीर्य्य नाम ब्रह्मा ने बताये ॥ गिरत वीर्य्य जल अण्डज भयऊ । सोन प्रकाश छाय जलगयऊ ॥ उस अंडज से भयो उदारा ब्रह्माजी लीन्ह्यों अवतारा ॥ क्षेत्रज्ञ पुरुष शम्भु नाराय॰ कमलासन विरंचि तारायण ॥ ये सब नाम ब्रह्मके राजें एकहि अर्थ सकल के छाजें ॥ जलका नाम नार मुनि गावें अयन तासु अस्थान बतावें ॥ सन्धि मिले नारायण साजें । ऐसहि अर्थ एक सब राजें ॥

दो॰ सदसत् नित्य अव्यक्तभे कारणते उत्पत्त ।
यासों ब्रह्मानाम भा सकल जक्तमें व्यक्त ॥

सो॰ बहुदिनविधितपकीन जानाध्यानप्रभावतब ॥
अण्ड फोरि तब दीन द्वैखण्डा तामें किये ॥

चौ॰ एकखंडमें भूमिबनाई । दूसरसेआकाश रचाई ॥ आठौ दिशा बनायोताते । वरुणस्थानरच्यो विधिवाते । महतत्त्व अहंकार गुणतीना । हेतुमनुष्य उत्पन्न प्रबीना ॥ आदि ब्रह्म आकाश बनाया । क्रमते वायु तत्त्व उपजाया॥ यहि विधि देव आदि गण रचेऊ । पर्वतनदी खोहसब विरचेऊ ॥ काल विभाग कियो तापाछे । ऋतु कल्पना कियो विधिआछे ॥ काम क्रोध मद आदि बनाये । कर्म विवेक और उपजाये ॥ धर्म अधर्म प्रजा बहु भांती । सुख दुख युक्त कियो सज्ञाती ॥ कीनजो कर्म प्रजानर नारी । जाति विभाग वहीते प्यारी ॥ हिंसा सत्य असत्य प्रकाशा । धर्म अधर्म कि कीन्ह्यों आशा ॥ मिले आपु ही आपुसो आई । ज्यों ऋतुवृक्ष फरैं अधिकाई ॥ लोक वृद्धि के अर्थ स्वहाये । मुखतेब्राह्मण विधि उपजाये ॥

दो० भुजसे क्षत्रि बनायकर वैश्य जांघसेकाढ़ि।
शूद्र चरणसोंसिरजिकै कियोधराकी बाढ़ि॥

सो० पूरुब मुख ऋग्वेद देखत लियो वशिष्ठने।
दक्षिणयाजुर्वेद याज्ञवल्क्यलियो हर्षिकर॥

चौ० सामवेद निकला हर्षाई। पश्चिम मुखब्रह्मा के आई॥ ग्रहण कियो गौतमऋषि ताको। अति सुख होय बढ़त में जाको॥ वेद अथर्वण उत्तर जाये। शौनक ग्रहण कियो हर्षाये॥ लोक प्रसिद्ध पांचवां मुखसे। अष्टादश पुराण श्रुति बिकसे॥ पुनि विरंचि द्वै भागबनाये। अपनाहीं में ये उपजाये॥ दहिने भाग पुरुष शुभ राजै। बायें इस्त्री अतिछवि छाजै॥ उनसे भयो विराट प्रकाशा। फेरि सृष्टिकीकीन्ह्यों आशा॥ लगे करन तप बहुदिनताई। फिरिदश ऋषि उत्पन्न कराई। प्रजापत्य जे लोग कहावैं। पृथक पृथक में ताहि बतावैं॥ नारद पुलह पुलस्त्य सुहाई। अत्रिप्रचेता अतिसुखदाई॥ भृगुमरीचि अंगिरा विराजैं। सहित प्रजापति दस ऋषि राजैं॥ यहि विधि और विरञ्चिबनाये। महा तेजस्वी जे शुभदाये॥

दो० पुनः देवतादैत्य ऋषि गन्धर्व्वादि सहीत।
राक्षसपितरमनुष्यगणकहँलगकहौंअदीत॥

सो० बिजली बादल पक्ष वज्र इन्द्रधनुबानरह।
धूमकेतु अतिस्वक्ष उल्काआदिनक्षत्र बहु॥

चौ० किन्नर मत्स्य कीटपातंगा। शूकर हस्ति अश्व बहु रंगा॥ मच्छी मक्खर आदि बनाये। सकल सृष्टि कहि जाय न गाये॥ वर्णौं अब तिनका क्रमभूपा। जैसे

जन्म भयो सुखरूपा॥ हाथी मृग पिशाच पशु नाना। और मनुष्या जीव बखाना॥ ये सब ज़ायुजरूप कहावें। योनि भेद ये बाहर आवें॥ कछुवा मगर मत्स्य नहिं पारा। ये सब अंडज कहें उदारा॥ मक्खी जूं खटमल इत्यादिक। ये स्वेदज हैं कहौं प्रकाशिक॥ वृक्ष औषधी ये जो होवें। इनको सब उद्भिज कहि गोवें॥ जो फल के पकनेतक रहहीं। इनके बादि नष्ट ह्वै जहहीं॥ ताको विधि औषध कर भाखें। यहिविधिते सृष्टी सबराखें॥ विना पुष्प जिनमें फल लागें। वेई वनस्पतिकीहैंबागें॥ पुष्प सहित फल जामें सोहैं। वेई वृक्षसकल जगमोहें॥

दो॰ ऐसी बल्ली गुल्ममें जानो भेद सुजान।
पृथक पृथक कहँलगकहौं कबतक करोंबखान॥

सो॰ घने वृक्ष जे लागि अन्तः संज्ञ कहावहीं।
समुझैं ते बड़भागि सुख दुखजो ऊपरपरें॥

चौ॰ कर्म विवश अति तमसे घेरे। इससे वचन न कहत बनेरे॥ इसप्रकार विधि विरचि सँसारा। कीन्ही अतिव सृष्टि आपारा॥ जब आई विधिकी निशि भारी। कीन्ह्यों शयन सकल जगकारी॥ सकल सृष्टि तब भई विनाशा। ज्योति समान ब्रह्मके पासा॥ जब निद्रा त्यागो विधिभारी। सकल सृष्टि तबरच्यो विचारी॥ यहि विधि सृजत हरत जगदीशा। कल्प कल्प उपजावें ईशा॥ आदिकल्प सृष्टी उपजावें। अन्त कल्प सब नाश करावें॥ कल्पअजहिका द्योस कहावै। ताकी संख्या वेद बतावै॥ बार अठारह झपकैं आंखी। एक काष्ठा तेहि ममभाखी॥ तीस काष्ठा कलाबतावें। तीस

कलाको क्षण गोहरावैं। द्वादशक्षणबीतें जबआई। एक मुहूर्त्त होहि तब भाई॥ बीतें त्रिंश मुहूर्त्त भुवारा। दिवस रैनि तेहि कहौं पुकारा॥

दो० तीसदिवसकोमासकहि युग्ममासऋतुजान।
जबबीतैंऋतुतीनमिलि ताको अयन प्रमान॥

सो० बीतें अयन प्रचारि द्वै दोएकहि सन्धिमें।
ताको वर्ष विचारि कहें पुराण प्रतिष्ठ जे॥

चौ० येसब भेद सूर्य्यके गाये। अब पितरों के कहौं बनाये॥ बीतै मासएक जब आई। रैनि दिवस पितरौं कीजाई॥ शुक्लपक्ष को रैनिबितावैं। कृष्णपक्ष दिनको मनभावैं॥ सूर्य्य वर्ष जब बीतै आई। दिवसरैनि देवतों की जाई॥ उतरायण को दिवस बखानैं। दक्षिणायन को रात्रि प्रमानैं॥ अबमैं संध्या कहौं बखाना। जो नरकी बीतै शुभठाना॥ सहस्रअष्ट दसलक्ष द्वितीया। ताको सतयुग कहौं प्रतीया॥ बीतें षोड़श सहस्र लक्षद्वै। त्रेता ताको कहौं प्रसन द्वै॥ सहस्र चवालिस एकै लक्षा। ताको द्वापर कहौं प्रत्यक्षा॥ सहस्र बहत्तर बीतैं आई। कलियुग की है यह प्रभुताई॥ ये सब सन्ध्या भेद गनावा। अब आगेका सुनो बनावा॥ बीतैं सहस्र चौयुगी जबहीं। होय दिवस ब्रह्मा का तबहीं॥

दो० अयुतदिवसबीतैंजबहि युग्मघड़ीहरिजान।
घटिद्वादशलक्षहोहिंजो अधपलरुद्रप्रमान॥

सो० कहौंधर्मव्याख्यात धर्मअधर्मबखानि कर।
होहिं सुफलसबगातजाहिसुनेपातक कटैं॥

चौ० सतयुग धर्म धरे चौपावा। रहे विराज्य धर-

णिपरछावा॥ त्रेता चरणतीन महि छाजैं। द्वापर दोय चरण शुभराजे॥ कलियुग चरण एक महि धरिकै। रहैं बिराजमान अस करिकै॥ सतयुग नर शुभ ज्ञान विराजैं। चत्युसतवर्ष भूमि में राजें॥ त्रेता त्रिंशत वर्ष प्रमानै। रहैं भूमि में सबजग जानै॥ द्वापर द्वै सत जियें विचारे। कलियुग शतहि वर्ष प्रण धारे॥ सतयुग में तपरहै प्रधाना। त्रेताज्ञान सबहि जगजाना॥ द्वापर यज्ञकरैं शुभकारी। कलियुग दान प्रतिष्ठ विचारी॥ पढ़ैं पढ़ावैं यज्ञकरावैं। दान लेहिं देवैं मनभावैं॥ यज्ञकरैं सुंदर शुभकारी। ये षटकर्म द्विजनके भारी॥ यज्ञ पठन जगरक्षित धर्म्मा। बिषयभोग ये क्षत्रियकर्म्मा॥ दान देहिं ये धर्म गनाये। विधिने क्षत्रि लिये करवाये॥

दो० यज्ञ करन पढ़ना कृषी दान देव पशु रक्ष।
विधिने दीन्ह्यों वैश्यको वणिज कर्म ये स्वक्ष॥

सो० पुनि विधि ने उपजाय सेवादीन्ही शूद्रको।
करो जगतमें जाय तीनवर्ण जे भूमिपर॥

चौ० यहिविधि कर्मबांटिअजदीन्हा। अंगीकारसबन ने कीन्हा॥ पुरुष देह अतिही शुभ राजै। नाभि भाग से ऊपर छाजै॥ ताहूमें मुख मुख्य प्रधाना। दशों अंग ते उत्तम जाना॥ विधिमुखसे ब्राह्मण निर्मयऊ। यासों सबमें उत्तम भयऊ॥ बहुत काल तप ब्रह्मा कीना। तब ब्राह्मणको रच्यो प्रबीना॥ यासों विप्रभूमिका स्वामी। हैशिरताज जगतका नामी॥ जेहि विधिपितर हव्यमुख खावैं। वामुख से ब्राह्मण निर्मावैं॥ सकल भूत में प्राणी श्रेष्ठा। प्राणी में बुधिमान सश्रेष्ठा॥ बुद्धिमान

में मानुष जानों। मानुषमें ब्राह्मण शुभमानों॥ द्विजनों में विद्वान बतावैं। विद्वजनों में कृतबुधि गावैं॥ कृतबुधियों में कर्मकरैया। तामें ब्रह्मवेता शुभछैया॥ ब्राह्मण धर्म बटोरन कारण। औधर्महुके शुभ आचारण॥

दो० ब्राह्मण सबमें श्रेष्ठहै तीन वर्णका राज।
जोचाहै सोई करै सुख दुख को शिरताज॥

सो० जो हियमें खुशहोय करै सहायत्रिवर्णको।
करै क्रोध जोसोय होय अभाव तुरंतही॥

चौ० इससे पूजनीय महिमाहीं। चलै प्रभुत्व आन कोनाहीं॥ निजइच्छासे स्वर्गहिजावै। महर्लोक ता पाछेपावै॥ पुनि जनलोक सिधारै जाई। फिरि ब्रह्मत्व क होइ स्वहाई॥ यहसुनि शतानीक नृपबोले। हेसुमंतु मैं कहौं यखोले॥ ब्रह्मलोक ब्रह्मत्व जो आही। तामें द्विज कौनी विधिजाही॥ सो समुझाय कहौ मुनिजाते। मिटै सँदेह बढ़ै सुखताते॥ सुनि बोले मुनि सुनहुमहीपा। सब वृत्तांत कहौं कुलदीपा॥ जाकहों अड़तालिस कर्मा। गर्भाधान आदि शुभवर्मा॥ ब्रह्मलोक का सो चलि जावै। औ ब्रह्मत्व सहज में पावै॥ पृथक पृथक में वरणौं ताको। लिखा वृत्तांतवेदमें जाको॥ गर्भाधान पुंसवन जानो। सीमँत जातकर्म शुभ मानो॥ नाम करण अनप्राशन राजै। चौड़ मेखला चौविधि साजै॥

दो० वेदवृत्त अस्नान विधि और विवाहप्रमान।
पंच महायज्ञों करै श्राद्ध अष्टका जान॥

सो० पुनः पार्वणशाद्ध करै श्रावणी जानिकर।
आग्रहायणीश्राद्ध चैत्री आश्वयुजी शुभ॥

चौ० अनलहोत्र अरु दर्शबखानो। पौर्णमास चातुर्मस जानो॥ निरूढ़ पशुबंध सौत्रामनी। अग्निष्टोम करैं शुभघनी॥ अत्यग्निष्टोम षोड़शी कहिये। वाजपेय अत्रिराजहु लहिये॥ सप्तसोम येहैं संसारा। अष्ट और गुणहैं शुभकारा॥ दया क्षांति अनसूया कहिये। अनायास मंगल को लहिये॥ आकार्षण शौचस्पृहा। येगुण अष्टम द्विजकेरहा॥ ताहि खुलासा करिसमभाऊं। हे भूपति मैं तुम्हैं बताऊं॥ गुणीगुणनको नाहिं छिपावै। निर्गुणकीभी अस्तुतिगावै॥ होय प्रसन्न देखिपर दोषा। मग्न रहै हर्दम शुभभेषा॥ अनसूया ताको नृप जानो। अब आगेका भेद बखानो॥ मित्र शत्रु ममपर को कहिये। यामें भेद तनुक नहिं लहिये॥ पर दुख देखि करैजो रक्षा। वाको दया कहैं मनस्वक्षा॥

दो० मनोकामना वचन से देय दुःख जो आय।
क्रोध करै नहिंताहुपर वाही क्षमा कहाय॥

सो० खाय न कबहुं अभक्ष्य रहै न दुर्जन संगमें।
करैअचार स्वदक्ष शौच नाम ताको कहैं॥

चौ० धर्म करै चाहै शुभकारा। वामें होवैकष्ट अपारा॥ ताको त्याजकरै जो कोई। अनायास वाहीको गोई॥ नित्य करै शुभकर्मसुखारी। त्यागैदुष्ट कर्मजे भारी॥ वाको मंगल वेद बतावैं। यहि क्रमसे औरो शुभ गावैं॥ जोधन संचय दुःख उठाई। वामें पुण्य करै कछु भाई॥ ताहि अकार्षण नाम बतावें। यह गुण सब में उत्तमगावैं॥ जो प्रभुकी इच्छाधन मिलही। वहिमें मग्नहोय जो रहही॥ करै न आश पराये धनको। ताहि

स्पृहा कहै सगुणको ॥ ये अष्टम गुण अरु सँस्कारा।
जो द्विज इनको तनमें धारा ॥ वहपावै ब्रह्मत्व नृपीशा।
ब्रह्मलोक का होहिअधीशा ॥ जो ये कर्मकरै मनलाई।
वर्णाश्रम धर्महि सिरजाई ॥ पावै अवश्य मुक्ति कुल-
दीपा। सो हम तुमसों कहा महीपा ॥

दो० जो याको मनसे पढ़ै अथवा सुनै सुजान।
सकलकामना देहिं तेहि कृपासिन्धु भगवान ॥

सो० पावै उत्तम रूप लक्ष्मी मिलै अघाय कर।
बाढ़ैकीर्त्ति अनूप यश धनसुतबांधव मिलहिं॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणे कृष्णबिहारीशुक्ल बदर्का
निवासिबिरचितेसृष्ट्युत्पत्तिवब्राह्मणसंस्कार
वर्णनोनामत्रतीयोंऽशः ॥ ३ ॥

दो० शतानीक अतिहर्षकर बोले मुनिसों बानि।
सँस्कारोंके लक्षणहि कहौदास निजजानि ॥

सो० वर्णाश्रमके धर्म ये सबश्रवण कराइये।
और आचमनकर्म कहहुनाथसमुझायकर ॥

चौ० बिहँसे मुनिसुनि नृपकीबानी। सुनो भूपमैंकहौं
बखानी ॥ गर्भाधान पुंसवन कहिये। जातकर्म सीमंतहु
लहिये ॥ नामकर्ण अनप्राशन जानो । चौंड़ जनेऊको
नृपमानो ॥ जो येकर्मकरै द्विजज्ञानी। बीजदोषकी होवै
हानी ॥ निवृत होहिं गर्भ के दोखा। हैं ये कर्म सबनसो
चोखा॥ साध्यायी व्रत होम गनाऊं। महायज्ञ यज्ञहुको
नाऊं॥ येइत्यादि कियेसे कर्मा। ब्रह्मरूपहोजायस्वधर्मा॥
नालच्छेदनके प्रथमाही। जातकर्म होवेशुभ ताही॥ जा
सों वेदमंत्र उच्चरिकै। सुवरण शहत और घृतभरिकै॥

बालक को प्राशन करवावै। तापीछे शुभनाम धरावै॥
दश द्वादश अष्टादश माही। अथवाएकमास जबजाही॥
शुभग मुहूर्त्तपरै जब आई। नामकर्णको तबहि धराई॥
दो० धरैशुभग द्विजनामको महासमंगलकारि।
जैसे शिवशर्माशुभग ऐसहि धरैविचारि॥
सो० क्षत्रियका बलयुक्त जैसे इन्द्रवर्माकहहिं।
धरैनाम शुभयुक्त अपनीयुक्ति बनायकर॥
चौ० वैश्य नाम धनका संयोगी। जैसे धनवर्द्धनहै योगी॥ नामशूद्रका बुरारखावै। जैसेसर्व दासगोहरावै॥ औ मनुजीने कहा विचारी। ऐसेनाम धरै अनुसारी॥ द्विजके नाममें शर्मासाजै। क्षत्रीके वर्मा शुभराजै॥ वैश्य नाममें पुष्टिमिलावै। दाससहीतशूद्रको गावै॥ इस्त्रीनाम धरै बड़ज्ञानी। जाकेअर्थ समुभमें आनी॥ दुःखपरैनहिं बोलत जाके। होय सुमंगलसुन्दरताके॥ जाकेलेतहृदय सुखपावै। ऐसनाम द्विजताहि धरावै॥ अंतहोइजेहिके आकारा। अथवा दीर्घहोहिंइकारा॥ द्वादशदिवसबीति जबजावै।अथवा एकमास नगिचावै॥ तादिन बालकबा हरजावै। श्रुतिपुराण यह लोक बतावै॥ षष्ठमास जब बीतैंआई। अनप्राशन तबकरै स्वहाई॥
दो० पहिले अथवा तीसरे वर्षप्रयत्न विचारि।
मुंडन बालकको करै मनुजी कहैं हँकारि॥
सो० गर्भ अष्टमा वर्ष ब्राह्मणको देवै जनव।
गर्भ बारहेंवर्ष क्षत्रीको पहिरावही॥
चौ०गर्भहोहिं जबद्वादश वर्षा। करैजनव वैश्यनको हर्षा॥ रहैजो ब्रह्मचर्य द्विजभारी। पांचवर्ष कहैअधि-

कारी ॥ करेजोबलकीइच्छाक्षत्रिय। षष्ठवर्ष में होयपवित्रिय ॥ जोधन चाहैंवैश्यअपारा। जनवअष्टमेंकरैभुवारा ॥ ब्राह्मण षोडश वर्षप्रचारी। द्वाविंशवर्ष क्षत्रिकी भारी ॥ चतुर्विंशवैश्यों के भारी। येगायत्रीके अधिकारी ॥ जोइन से पल भरि बढ़िजावें। गायत्रीकेफल नहिंपावें ॥ ये सब व्रात कहावें भूपा। व्रातस्तोमकरें जब दीपा ॥ होहिंशुद्ध तब ये त्रय वर्णा। तबतक व्याहनहीं अधिकर्णा ॥ यज्ञोपवीत करैंजब कर्मा। लावेंशुभग तीनअतिचर्मा ॥ सिंह मृगाबकरेका राजे। ऐसेतीनवस्त्रओढ़ाजै ॥ शणअलसी औभेड़की ऊना। यहिविधि लावै वर्णौतीना ॥

दो० तीनलड़ीकी मेखला बरै मूँजकी आय।
ब्राह्मणको पहिराइये यज्ञोपीत बनाय ॥

सो० मुरानाम तृणजानि क्षत्रियको पहिराइये।
शणतंतुव पहिंचानि वैश्यपहोरैंजनवसम ॥

चौ० जो मेखलाको द्विज बनवावे। एक पंचत्रयग्रंथ लगावे ॥ ब्राह्मण सूत कपास जनेऊ। क्षत्रिय शणकापहिरै सोऊ ॥ वैश्य भेड़की ऊनमँगाई। ताको जनवलेय बनवाई ॥ब्राह्मण विल्व पलास लैआवै। ताहिकाटिशुभ दण्ड बनावे ॥ शिरतक ऊंचा धारै सोई। अबक्षत्रियका कहौं बनोई ॥ बड़वा खैर काष्ठका डंडा। मस्तक तक धारै शुभदंडा ॥ पीपर गूलरको लै आवै। वैश्यनाक तक दंड बनावे ॥ प्रथम भीष मातासों लेवै। या मौसी भगिनी तेहि देवै ॥ सुवर्णअन्नरूपकीभिक्षा। येदेवै सुंदर शुभ इक्षा ॥ सोलै गुरूपास वहजाई। लै आज्ञा बैठेशुभठाईं ॥ करैआचमनउत्तरमुखको। फिरखावैसुन्दरउसअनको ॥

बैठि पूर्व्वमुखजो अनखावै। पचै अन्न आयुष बहुपावै॥

दो॰ दक्षिण यश पश्चिमधनहि उत्तरसत्यप्रमान।
मनलगाय भोजनकरै ताहिदेहिं भगवान॥

चौ॰ जब भोजन करिहोय सुखारी। फिरिआचमन करै शुभकारी॥ सन्तत करै विनय शुभ अनकी। जल अस्पर्श करै इन्द्रिन की॥ खात अन्न जो कहुं चलि जावै। फेरिआय वह भोजन खावै॥ ताको होय नरकमें बासा। मनु जीने कीन्ह्यो परकासा॥ याको मैं इतिहास बखानो। पुष्कर द्वीप नगरयक जानो॥ सतयुगवर्त्तमान शुभराजै। धनवर्द्धन तहँ वैश्य विराजै॥ ऋतु ग्रीषम मध्याह्न सोहावा। वैश्यराज तब भोजन खावा॥ इतनेमें यक शब्द अपारा। बाहर हुआ सुनहु भूवारा॥ सोसुनि वैश्यचले अधखाये। वहां शब्दको भेद न पाये॥ लौटि आय फिरि भोजन कर्यऊ। जो कुछ थारीमें रहि गयऊ॥ खातै मृत्यु भयो भूपाला। पर्यो नरक जहँ विकट कराला॥ यासों अन्तर खात न करई। नहिंकाहू सों वचन उचरई॥

दो॰ भोजनकरै उछिष्ट जो पावै नरक निदान।
भूत प्रेत ताको ग्रसैं होय अशुद्ध सुजान॥

सो॰ भोजनकरै पवित्र शुचि होकरजो विप्रवर।
नाशै दुसह कलित्र जावै स्वर्गमहान सो॥

चौ॰ किंच आचमन करैजो प्रानी। पावै स्वर्ग सकल सुखदानी॥ हस्त चरण धोवै शुचिपानी। पुनिआसनपर बैठेआनी॥ अत्युत्तम जहँ भूमि स्वहाई। तहँपर आसन देइ डसाई॥ उत्तर मुखको बैठे प्रानी। या पूरब

मुख करै सुज्ञानी ॥ दहिना हस्तजांघबिच करिकै। दोनों चरण बराबरि धरिकै ॥ बांधि शिखा शीतलजललाकर। करै आचमन बुद्धि उजागर ॥ काम क्रोध शीघ्रता गनाये। सम्भाषण औ दम्भ जनाये ॥ मलिन वारि या उष्ण जोहोवै। इनको त्यागि आचमन लेवै ॥ बसैं चत्व तीरथ द्विज केरे। जे हस्तक में करैंबसेरे ॥ तिनके नाम कहौं मैं गाई। सुनहु भूप तुम चित्त लगाई ॥ देव तीर्थ सुंदर शुभराजै। पितृ तीर्थअति शुभग विराजै ॥ प्रजापत्य औ सोम कहाये। चारि तीर्थ वेदनये गाये ॥

दो० वासस्थान कहौं तिन्हैं सुनियो चित्तलगाय।
अग्र अँगुलियों के सकल देवतीर्थ दरशाय ॥

सो० पितृ तीर्थको वास रहै तर्जनी के निकट।
औ अंगुष्ठहि पास यह भाष्यो शुभदेवने ॥

चौ० मूल कनिष्ठाकी जो होवै। ब्रह्मतीर्थ तहँ वास करोवै ॥ प्राजापत्य तीर्थ जेहि कहिये। सौम्यतीर्थ को वासहु लहिये ॥ बसैं हस्तके मध्यम भागा। यहि विधि से हमने अनुरागा ॥ देव तीर्थ से करै य कर्मा। पूजैदेव और बलि धर्म्मा ॥ तर्पण पिण्डदान जो करई। पितृ तीर्थ से ये अनुसरई ॥ करै आचमन जोमनलाई। ब्रह्म तीर्थ से वेद बताई ॥ प्राजापत्य और विधि होमा। सोमपानये तीर्थक कर्म्मा ॥ ये विवाह के समय बतावै। तीर्थ सहित इनको करवावै ॥ सौम्य तीर्थ से ये बतलाये। करै कमंडल ग्रहण स्वहाये ॥ दधिप्राशन आदिक शुभ कर्मा। इनको विधिसे करै स्वधर्मा ॥ सब अंगुलि एकत्र करावै। औ एकाग्रचित्त ह्वै जावै ॥ निर्म्मल

जल लेकर सुखकारी । तीन आचमन करै विचारी ॥

दो० सकल पाप ताके कटैं सुनो भूप जगपाल ।
निश्चय जानो भेदनहिं कह्यों वेदका हाल ॥

सो० मनसे पढ़ै सुजान जो याको चितलायकर ।
होयतासु कल्यान अन्न धन्न बहु सुखमिलै ॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णविहारीशुक्लचंदर्का
निवासिविरचितेब्राह्मणसंस्कारवआचमन
विधानवर्णनोनामचतुर्थोऽशः ॥ ४ ॥

दो० अतिआनँदलहिनृपतिमनसुनिआचमनविधान।
बोले मुनिसों विनयकरि अतिमृदुवचनसुजान ॥

चौ०जो मोपर मुनिहौ अनुकूला। कथा कहौतौसुख की मूला ॥ जेहि विधि जीव उदर में आवै । गर्भवास दुख जेहि विधिपावै ॥ उदर मांझक्या भक्षण करई । कौन कर्मसे सद्गति मिलई ॥ सो समुझाय कहौ मुनिज्ञा-नी । अति अभिलाष सुनन की बानी ॥ बोलेमुनि सुनु नृप चितलाई । कहौं कथा अति परम स्वहाई ॥ जो पूरुब श्रीकृष्णसुनायो । सुनत युधिष्ठिर अतिमुदपायो ॥ सोइ कथा हम कहैं स्वहावन । अत्युत्तम दुखदूरि करा-वन ॥ करै जीव जो उत्तम कर्म्म । पावै देव योनि नहिं भर्म्म ॥ मिश्रकर्मसे मानुष योनी । तिर्यक योनि अशुभ से होनी ॥ पापसे पाप योनिमें जावै । पुण्यसे पुण्ययोनि जिवपावै ॥

छं० ऋतुकालमें निर्दोष शुक्र सुवायु करके प्रेरिता । एकता को प्राप्तहोता सन्धिहोकर शोणिता ॥ शुक्रकेसा-थहि सुकर्मो करके प्रेरित जीवभी । योनिमें प्राविष्टहोता

मूल परती है तभी॥ एक दिन में शुक्र शोणित सन्धि मिलकर कललह्वै। पांच रैनि में कलल बुद्बुद रूप ह्वै जाताहै स्वै॥ सात रैनिमें बुद्बुदाकी मांस पेशीबनति है। चत्वदश दिन मँासपेशी त्वहु मांसमिलि दृढ़ होति है॥ पच्चीस बासर बादि उस पेशी में अंकुर जमतिहै। यक मास में उस अंकुरों के पँच भाग ह्वै ह्वै कढ़तिहैं॥ चत्व मासहि अंकुरोंके भाग अंगुली बन्ति हैं। पँचमास में नासिका मुखकर्णई सबठन्तिहैं॥ षष्ठमास में दंतनख औ कर्ण बिच छिद्होति हैं। सप्त मासहि लिंग गुदा या योनि नाभी बनति है॥ अंगमें संकोचभी वहि तबहि से होआतहै। अष्ट मासमें अंग प्रत्यंगसंपूर्ण होजातहै॥

दो० शिरमें केश निकल्तिहैं औ माता जो खाय।
वाको रस नाभी डगर बालक देह समाय॥
पोषण होवै उसीसे गर्भ स्थित जो जीव।
यह विचार मनमेंकरै लीन्ह्यो जन्म अतीव॥

सो० बार बार भै मृत्यु अब मैं जन्मतही मही।
पुनिभूबंधन प्राप्त्यु करै अनेकविचार अस॥
शोचै मोक्ष उपाय अतिदुःखित ह्वै गर्भ में।
ज्यों मेरु तर दबिजाय तसदुखहोवै विष्ठसे॥

स० ज्योंदुख डूबत वारिधिमें परै त्यों दुखगर्भकेबारिसे पावै। ज्यों दुखलोह तपाके छुये परै त्यों दुख पेट कि अग्नि तपावै॥ ज्यों दुख तप्त सुई कुचने परै अष्ट गुणा त्यहि गर्भ में आवै। कोटि गुणा अधिकी दुखगर्भ से जन्मत योनि कि पीड़ सतावै॥

दो० इस दुखसे बेसुधपरै बड़ा कष्ट यह पाय।

जैसे तिल कोल्हू परे निःरसह्वै गिरिजाय ॥
ऐसहि वदन निसत्व हो महादुःखको पाय ।
योनियंत्र के पीड़से भूमि त्वर्त्त गिरिजाय ॥

पवंगम छन्द ॥

मुखवर्ण जिसका द्वारहै । अरु युग्म ओष्ठ कपाट है ॥
इन्द्रियां सबहि झरूख हैं । यहि भांति देहस्वरूप हैं ॥

दो० दँतजिह्वा गल बात पित जराकाम शोकाहि ।
राग द्वेषतृष्णारिसा आदि उपकरण जाहि ॥

क० ऐसा यह देह रूप है अनित्य गेहनित्य आत्माको बास अस्थान इदम् द्याहहै । सकल शरीर शुक्र शोणित से उपजत नित्यहि यह विष्ठ मूत्र आदि सो भराहै ॥ है अपवित्र अत्यंत कहिजात नहिं कबहूं न पाक होत नर्करूप वासहै । जिसप्रकार विष्ठासे घटभरा अपवित्र तैसही यह देहरूप अतिही खराब है ॥

दो० जिसमें माखन मीसरी खाने से मलहोय ।
ऐसी देह खराब है प्यार करो जनि कोय ॥
भजो रामकोचित्त से सकलकाम बिसराय ।
जासोंसद्गतिमिलैगी विष्णुलोक दरशाय ॥
जब बालक जन्महीमही लागत पवन झकोर ।
पूर्व जन्म को स्मरण भूलिजाय वहिठौर ॥

सो० अति दुखपावै तास काटहिं कीट पतंगजो ।
होहिनवचनप्रकास अतिव्याकुलनित्याहिरहै ॥

दो० दंत ऊगने के समय अति दुख पावै ताहि ।
भांति भांतिके रोगसों पीड़ित रहै सदाहि ॥

चौ० मोहसे बालक विष्ठा खावै । कर्णछेद में अति

दुख पावै॥ युवाअवस्था आवै जबहीं। पावै सुख नाहिं नेकौ तबहीं॥ उपजै ईर्षा बहुत प्रकारा। अधिक सतावै काम पियारा॥ निशा नींद नहिं नेकौ पड़ती। दिनको धनकी चिंता बढ़ती॥ रमै जो परनारी के साथहि। अति दुख पावै होत बुढ़ापहि॥ लागै कँपन शरीर दुखारी। सब अँगजर्जरहोहिं खुवारी॥ पुत्रबधूत्यहि कहा न करहीं। अतिदुख तासु समयमें लहहीं॥ कोई कर्म होहिं नहिं सिद्धा। पछितावै तब अधिकहु वृद्धा॥ होहिं बात पित कफ अधिकारी। बाढ़ै रोग अनेक प्रकारी॥ सकलरोग काहै घरदेहा। पुनि कैसे होवै सुखतेहा॥

दो० यक शत यक मृत्यु देहके हैं ये सुनो भुवाल।
उनमें यकहै काल मृत्यु शतमृत्युहिआकाल॥
कालमृत्यु जब आवही निश्चय छूटैं प्रान।
चहै यत्न कोटिन करै होइ न त्यहि कल्यान॥

चौ० मृत्युसमान आन नहिं दुखहै। अतिही कष्ट परत तेहि क्षणहै॥ हेमाता हेपिता पियारे। हेभाई सकुटुम्ब हमारे॥ अतिही दुख होवै नरकाहीं। हाथ पैर पटकै खटमाहीं॥ घुरुघुरु शब्द कंठमें होवै। यहिविधि मृत्युकाल नर पोवै॥ है यह देह अतिहि दुखकारी। घोर नरकमें डारनहारी॥ यासों भजो रामका नामा। छोड़ि मोह दँभ आदिक कामा॥ जासों स्वर्ग मिलै हर्षाई। करहु ताहि सबकाम विहाई॥

दो० आदिअन्त औमध्यमें दुखही मिलै सदाहि।
बहुतखाव तो दुखमिलै सूक्ष्मखावदुखताहि॥
सब रोगों से श्रेष्ठ है जाको क्षुधा कहाहि।

इसको औषध अन्न है सुखका साधन नाहि॥
होत भोर मलमूत्र की लागत बाधा ताहि।
मध्य क्षुधा तृष्णा बढ़ै अति दुखदायक जाहि॥
चौ॰ भरे पेट जब अनको खाई। बाढ़ै काम बिथा तब आई॥ रैनि नींद देवै दुख अधिकहि। दिन धन संपादन दुख बहुतहि॥ संपादन धनकी जो रक्षा। तामें दुख अतिहोहिं प्रत्यक्षा॥ पुनि व्ययकरने में दुख होवै। यासों धन सुख कबहुँ न देवै॥ चोर अग्नि राजा जल इनसे। पावै धनवाला दुख तिनसे॥ ज्यहि विधि मांस अकाशहि फेंकै। पक्षी खायँ चोंचमें लैकै॥ भूमि देहु जो मांस चलाई। खावैं श्वान गिद्ध हरषाई॥ जल में परै मत्स्य त्यहि खावैं। ऐसहि धनवाला दुखपावै॥ हेमँतऋतु में शीत सतावै। ग्रीषम में गरमी बहु पावै॥ वर्षामें वर्षा भयदायी। यासों काल नहीं सुखदायी॥
दो॰ आदि अन्त पर्य्यन्त तक रहै दुखी यह देह।
फँसि नर माया जालमें अति दुस्सह दुखलेह॥
यासों जो ब्रह्मचर्य रहि करत बरत उपवास।
अतुल सुःख भूमें लहै अन्त स्वर्गकी आस॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णविहारीशुक्लबदर्का
निवासिविरचितेगर्भवासदुःखवर्णनो
नामपंचमोऽशः॥ ५॥

दो॰ पियत पियत यह मधुररस तृप्तहोहिंनहिंगात।
याते कथा स्वहावनी और कहो विख्यात॥
सो॰ विहँसे मुनिसुनि वैन बोले अमृत वचन प्रिय।
सुनहु भूप सुख दैन कथा कहों अनपावनी॥

चौ० ज्यहि प्रथमहि श्रीकृष्ण बखानो। सुनत युधिष्ठिर अति सुखमानो॥ सोइ कथा मैं कहौं स्वहाई। सुनहु भूप तुम निज चितलाई॥ बोले हर्षियुधिष्ठिर राजा। सुनहु कृष्ण स्वामी महराजा॥ वर्णाश्रम के धर्म सोहाये। सोतुम हमसों कहौ बनाये॥ बोले कृष्ण हर्षयुत बानी। सुनहु युधिष्ठिर कहौं बखानी॥ सबसों मूल आचरण जानो। सत्य सत्य तुम करौ प्रमानो॥ हीन आचरण होइ जो कोई। नरक वास वह पावै सोई॥ एक आचरण धर्म कहावैं। और लोगमिथ्या सब गावैं॥ आचारहि कुल श्रेष्ठ कहावै। विना आचरण दुख बहुपावै॥ बोले धर्मध्वज सुखमानी। नाथआचरण कहौ बखानी॥ सुनहु भूप तुम चित्त लगाई। हम आचरण कहैं शुभगाई॥ ब्राह्म्य मुहूर्त्त जानि जबपावै। तब उठि धर्म अर्थ चितलावै॥ करै आचमन चित्तलगाई। प्रातःसन्ध्या मौन कराई॥ अस्ताचल देखै रवि नाहीं। दीर्घ आयुहोवै शुभताहीं॥ जोनाहिं सन्ध्याशाम सकारे। करै स्व शूद्रकर्म गुणभारे॥ दिवस उत्तरा मुख मलत्यागहि। रैनि दक्षिणा मुखमल छांड़हि॥ आच्छादित भुव करि जब लेवै। शिरमें वस्त्रबांधि सुखदेवै॥ मल त्यागे तबहीं नरज्ञाना। मानो सत्य प्रमान बखाना॥ तीरथ ग्रामगोष्ठक्षेत्रादिक। इनमेंशौच मने मनुजादिक॥ जल भीतर मूषकके बिलसे। बंबउरि आदिकहौं जे हितसे॥ इनकी मिट्टी अशुध प्रमाने। शौचकर्म केहित नहिंआनै॥ शौचकर्मजबकरैंमहाना। अधिक मृत्तिकालेइ प्रमाना॥ देवार्च्चन औ भोजनजानो। करिआचमन आदिये ठानो॥

हैं विद्वान पुरुषजे धर्मा। धन उपराजैं करि शुभकर्मा॥ अर्थधर्म अरु काम स्वहाये। साधन सदाकरैं मनलाये॥ इनके साधन से सुख पावैं। अणिमादिक सिद्धी बहु आवैं॥ होय द्रव्य जो प्राप्त सुजाना। चतुर्थांश परलोक लगाना॥ चतुर्थांश संचय करि राखै। अर्द्धभाग अपना शुभचाखै॥ ऐसोकर्म करैंजोभाई। धर्मादिक सिधहोहिं सोहाई॥ केश प्रसाधन औ दँतधावन। दर्श देव पूजन मनभावन॥ आदि करै मध्याह्न सुजाना। सुनहु भूप हम और बखाना॥ सेवै अग्नि दूरिसे आई। मुत्र पुरीष दूरिको जाई॥ ताको सुख अतिहोय अपारा। कहैं परम यह रहस उदारा॥ ढेला मर्दन करै जो कोई। तृणटूरै बैठे मा सोई॥ काटै नहु दांतन सों दाबी। रहै उच्छिष्ट भोज्य को चाबी॥ अल्पआयु ताकी ह्वै जावै। श्रुतिपुराण यहलोक बतावै॥ नंगी परइस्त्री जो देखै। अथवा अपनी विष्ठापेखै॥ रजस्वला से भाषैजाई। अथवा दर्शस्पर्श कराई॥ जलके बीच मूत्र को त्यागै। या मैथुन को मन अनुरागै॥ इतने कर्म करै जो कोई। दुख दुगुना तिगुना का होई॥ भोजन करैन फूटेपात्रा। खोलि केशनाहिं खावै ज्ञात्रा॥ वर्जित नंगेमें अस्नाना। नग्न उच्छिष्ट शयन नाहिं जाना॥ रहै उच्छिष्ट हस्त जब ताई। शिर अस्पर्श करै नाहिं भाई॥ शिरमें करै प्रहार न कबहूं। हैराजा सब का शिर गनहूं। पुत्रशिष्य को नीति पढ़ावै। तब शिर को वर्जिनाहिं गावै॥ युग्म हस्त शिर नाहिं खुजावै। बिन कारण शिरन्हान न लावै॥ ग्रहण विना निशि करै नन्हाना। भोजन खायकरै नहिंस्नाना॥ गहिर

जलाशयमें न नहावै। शिरस्नान करि तैल बरावै॥ तिलपिष्ठा कबहूँ नहिं खावै। वाकी आयुष क्षयनहिं पावै॥ गुरुको दुष्कृत कबहुँ न भाखै। सदाधर्मको साधनराखै॥ परनिंदानहिंकरै सुजाना। निंदाहोत सुनै नहिंकाना॥ नये वस्त्र पहिरै सुखदाये। उत्तम औषध पानकराये॥ राखै केश हमेशा चिकने। मैल विहीन रहै तन अपने॥ रहै सुगंध देह लपटाये। हर्दम उत्तम भेष बनाये॥ श्वेतपुष्प धारण नृप करई। किंचित वस्त्रहरै नाहिंपरई॥ अप्रिय वचन कबहुँ नहिंबोलै। असत्यवचन प्रियहोय न खोलै॥ बोलै झूंठ न बात बनाई। रहै सदा यासों अलगाई॥ छिद्र आनके कबहुँ न खोलै। दुष्टभाव कबहूँ नहिंबोलै॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णविहारीशुक्लबदर्कानि
बासिविरचितेसदाचारधर्मप्रकाशवर्ण
नोनामषष्ठमोऽशः॥ ६ ॥

दो० उद्वेषीउन्मतपतितव्यभिचारिणिअतिमत्त।
कुलटापति क्रोधी हठी इनसे करै न हित्त॥

क० खोदैनाहिं नासिका व सांस मुंह ओढ़ायलेवै हँसै नाहिं ऊँचेस्वर न त्यागे वायु शब्दमें। श्मशान उपवन औ वृक्षछाया चातुष्पथ इनमें न जावै रैनिधुबघट कुशब्दमें। दुष्टको बरावै ग्रीष्म ऋतुरी लगावै शुभरात्रिलठ्ठ थाँभै दण्डधारै वन चलब्दमें। विनापायँ जूता न जावै द्वार बारबार केश अस्थिकांट भस्म परसैना भुवब्दमें॥

कु० ब्राह्मण भूप विद्वान गार्भिणी गो उनमत्ता।
मूकअंध अरु बधिर मत्तइस्त्री शुभवन्ता॥
लादे बोझ मँजूर जो येते आवैं आगे।

तिन्हें रास्ता देहि आदि उनके बिनमांगे॥

दो॰ जूता कपड़ा जानिये माला पुष्पबखानि।
धारण नहिं इनने करै दूसरके उतरानि॥
बचैसदा परनारि से महा नष्ट यह कर्म।
आयुक्षीण होवै बहुत नष्टहोय सबधर्म॥

चौ॰ इस्त्री रक्षाकरै भुवारा। करै न ईर्षा दोष विचारा॥ घटै ईर्षासे वयभाई। यासों ईर्षा सदा बचाई॥ व्यसनी मूर्ख कुरूप बखाने। उन्मत्त मायावी जाने॥ हीनअंग अधिकांगबखाने। इनको दानदेहि नहिंजाने॥ किन्तु अन्नजल देवै इनको। और नहीं पूछै कुछ हित को॥ अर्द्धरात्रि नहिं भोजन करई। होकर खड़ा कबौं नहिं पढ़ई॥ बहुत हास्य नहिंकरै अनैठे। पैर से आसन ऐंचि न बैठे॥ ब्राह्मण क्षत्री सर्प गनाये। इनसों वैर करै नहिं भाये॥ ये तीनों हैं तुल्य सुखारी। बदला लेहिंय दांव विचारी॥ सायं प्रातःकाल बखाने। इनमें गमन करै न अजाने॥ होहिं अपरचित जो नरनारी। वर्जित गमन तासुसँग भारी॥ औ परिचित जो होहिं मनुष्या। तिनके आगे चलैन स्वक्ष्या॥ आन मर्मनहिं करै स्पर्शा। क्रूर वचन नहिं बोलै हर्षा॥ होय निकृष्ट पुरुष जो कोई। वासों वेदन पढ़ै बनोई॥ जिस बाणी से आन उद्वेगा। कहै नहीं वह वचन अयोगा॥ अलक्ष्मी वाणी वह जानो। नरक देनको है परस्थानो॥ वचन रूप ये बाण कहावैं। जिनके लगत चैन नहिंपावैं॥ रात्रि दिवस शोचै मनलाई। मर्मबाण जब लागैंआई॥ शस्त्रलाग चाहै भरिआवै। पै ये बाण घाव करिजावै॥

यासों ज्ञानवान जो होई। इन बाणन नहिं मारीसोई॥ नास्तिकत्व अरु वेदकि निन्दा। द्वेषस्तम्भ अभिमान मलिन्दा॥ क्रूर स्वभाव वेद काकुत्सन। इनको त्यागे सदा प्रत्यक्षन॥ तारागण नहिं आन देखावै। द्विज निन्दाको बहुत बचावै॥ आदिपक्षकी तिथि नहिंभाखै। यह तिथि आयुष कमती राखै॥ अकस्मात छींके नर कोई। सो निष्ठीवन करै सचोई॥ लेय उसांसी वस्तर पहिरै। करै आचमन अंजुलि गहिरै॥ बसै जहां शुभ राजा होई। नीति कर्मजो करै सचोई॥ दर्पण मलिन नदेखै चेहरा। निशिनाहिं करै तासु सन हेरा॥ इससे आयुष अति घटिजावै। सर्वस्मृति यहि मनै करावै॥

दो० भोजन करै न प्रीतिसे घर सुनारके जाय।
नहिंताको विश्वासकरि रहै तासुघरछाय॥
फूटा पात्र निकारिये टूटी खाट बहाव।
कुक्कुट श्वान निकारि कै घरसे दूरिकराव॥

चौ० कंट वृक्षको देहु निकारी। ये घरमें नहिं राखु सुखारी॥ फूटपात्र जाकेघर होई। कलह विरोध बढ़ै अतिसोई॥ टूटी खाट होयजो धर्म्मा। वाहन को क्षय करै अधर्म्मा॥ कुक्कुट श्वान रहै जो छाई। ताघर पितर भोज्यनहिं पाई॥ कंटकवृक्ष होहिंजो धामा। आयपिशाच बसतिहैंतामा॥ बिन अस्नान कियेजो खावै। मानो मलको भक्ष्य पचावै॥ पंचयज्ञ बिन भोजन करई। मानो उदर रुधिरसों भरई॥ असंस्कृत अनमूत्र समाना। नहिं खावै यह कहौं प्रमाना॥ सुवासिनी गर्भिणी गनाई। रोगी बालक वृद्ध जनाई॥ प्रथमहिं इनको देय

खवाइ। पीछे आपखाय सुखदाई॥ भोजन करत आन जो आवै। निजखावै वाको न खिलावै॥ मान्हु पापककरै अहारा। यासों यह वर्जित है सारा॥ उत्तरमुख ह्वै भोजन खावै। अथवा पूरव मुखह्वै जावै॥ ह्वै प्रसन्न अति भोजन करई। इतनी बात और नहिं धरई॥ दुष्ट पुरुष का लाया अन्ना। और जुगुप्सित होयजो धन्ना॥ असंस्कृत उच्छिष्ट गनावै। इनको त्यागि और सब खावै॥

दो० बहुत नरोंके बीचते जोतुरतै चलिआय।
अथवा व्याकुल क्रोधसे सोक्षणभोज्यनखाय॥

चौ० विनापात्र नहिं भोजन करै। फूटेपात्र वारि नहिंधरै॥ उत्तम पात्र एकाग्रहि चित्ता। तब भोजनमें होहिं पवित्ता। आदि मिष्ट शुभभोजन खावै। पुनः अम्लकटु तिक्त पचावै॥ तापीछे पुनि कोमल खावै। यहि विधि तो पुराण शुभ गावै॥ दिनमें अम्ल बीचतुम जानो। रात्रि दही सत्तूके मानो॥ सर्वकाल कोविदरके माहीं। बसै अलक्ष्मी खायो नाहीं॥ भोजन समय न निंदै अनको। मौन पूर्व्वक खावै हव्य को॥ करि भोजन जब बाहरआवै। पैर धोय बीराको खावै॥ फेरैहस्त उदर पर नीके। इन नामों को सुमिरण करिके॥ कुम्भकर्ण बड़वानल जानो। भीम अगस्त्य शनिश्चरमानो॥

दो० आवै सायंकाल जो अतिथि द्वार पै भूप।
भोजन जल सत्कारकरि शय्या देयअनूप॥

चौ० आपहु सोवै उत्तमसेजा। कीर न जामें होंयअमेजा॥ कोमल बिछा बिछौना राजै। ऊंची नीची खाट न साजै॥ सोवै मुख पूरबको ह्वैके। अथवा मुख द-

क्षिण को फेंके ॥ अन्त दिशाजो सोवै कोई । कछुक दिवसमें रोगीहोई ॥ जल औ अग्नि साथ नहिं धारै । द्विज गुरु ओर न पांव पसारै ॥ अंजुलि से जल पीवै नाहीं । आंधि धूपसे बचै सदाहीं ॥ पुरुष बंधुके दुख सबहरई । भययुत को रक्षन बहु करई ॥ सदाचार में रहै हमेशा । बसै सदा उत्तम शुभदेशा ॥ वृथा मांस नहिं भक्षणकरई । दम्भ विवाद चित्त नाहिं धरई ॥ मांस कृशर शष्कुलि अरुपायस । अपने हित नहिं खायबनायस ॥ लै देवता को नाम बनावै । भोग लगाय आप शुभखावै ॥ रक्तपुष्प नहिं धारण करै । कुबलय कमल आदियेपहिरै ॥ भोजन शयन देवकी पूजा । इनमें वस्तर पहिरै दूजा ॥

दो० पिप्पलबट औ लकुच के औ गूलरको जानि ।
इनके फल खावैनहीं पुत्र वृद्धकी हानि ॥
पतित मनुष्यसंसर्ग नहिं करै कबहुँअनजान ।
वृद्ध दरिद्री मित्र को घरमें दे अस्थान ॥
इनके रहने से सदा होहि वृद्धिकी माहिं ।
मैना शुक पारावती रक्खै धाम सदाहिं ॥
छच्छूंदरि चिन्गुद्दरहि घरसे देय निकारि ।
बकरा चंदन बैलको रक्खे सदा निहारि ॥
वीणादर्पणघृतशहत औ जलअग्निबखानि ।
ये घरमें राखै सदा लक्ष्मी के हैं खानि ॥
वारण रथ औ अश्वपै चढ़ै सदा निरधारि ।
वर्णयौंयह श्रीकृष्णप्रभु उत्तमज्ञान विचारि ॥

चौ०सुनत युधिष्ठिर हर्षित भयऊ । वही कथा तुम

सों हम कहेऊ ॥ शतानीक सुनिअति सुखपाये। सजल नयन मोदनसों छाये ॥

दो० सोई कथा स्वहावनी कृष्णबिहारी पाय।
मत्यऽनुसार प्रकाश किय भाषा पद्य बनाय ॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णबिहारीशुक्लबदर्का
निवासिविरचितसदाचारज्ञानप्रकाश
वर्णनोनामसप्तमोऽशः ॥ ७ ॥

इतिआदिखण्डसमाप्तम् ॥

श्रीहरिश्शरणम् ॥

ज्ञानश्राभूषण ॥

द्वितीयखंडप्रारम्भः ॥

सो० दियेभाल सिंदूर एकदंत करिवर बदन ।
हे वाहन इंदूर भजौंआदि गिरजानँदन ॥

चौ० प्रभु लीलाकछु वरणि न जाई । मति अनुसार कहौं कछुगाई ॥ ज्यहि विधि विष्णुधरे अवतारा । सकल भूमिको भारउतारा ॥ सो कछु चरित्र कहौं मैं गाई । हिये सुमिरि श्रीपति रघुराई ॥ सत्ययुग विष्णुचारि अवतारा । मच्छ कच्छ वाराह उदारा ॥ और नृसिंह धस्यो तापाछे । अबत्रेताको वर्णौंआछे ॥ त्रेता विष्णु तीन अवतारा । सुरद्विज संतनके हितकारा ॥ परशुराम वामन गुणगाये । रामरूप दशरथ गृहजाये ॥ द्वापर विष्णु दोय अवतारा । कृष्ण बौद्ध ये कहौं विचारा ॥ कलियुग विष्णु एक अवतारा । कलकी नाम विदित संसारा ॥ जब२ परैभूमिपर भारा । तब२ लेहिंविष्णु अवतारा ॥ होहिं राक्षस अति दुखकारी । त्रासैं प्रजा महाभयभारी ॥ जबहिं दुष्टराक्षसकरि पापू । सुरद्विजसन्तनदेहिंसँतापू ॥ तबहिं विष्णु लेवैं अवतारा । दुष्टन मारि करैं संहारा ॥ हरिजोलीन वराह स्वरूपा । ताको मैं वर्णौं सुखरूपा ॥ जबब्रह्मा सोयेनिशिजानी । सकलसृष्टिकीभैतबहानी ॥

तासुज्योति सब क्कै इकठाई । नारायण मुखगई समाई ॥ तब प्रभु ध्यानकियो अनुरागे । देखाधरा वारिमें पागे ॥ शयन कियेविधि शुभ निशिजानी । सकल सृष्टि पूरित है पानी ॥ त्वरितरूप शूकर करलीन्हा । जल प्रवेश नारायणकीन्हा ॥ लै बुड्डी प्रभुगयो पताला । भेदि रसातल सुतल विताला ॥ देखा पृथ्वी परीमहाना । अति दुख युक्त न जाय बखाना ॥ पृथ्वी पहिंचान्यो जग स्वामी । परि चरणन अस कियो नमामी ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

जय जयति राघव रूप सुन्दर दुष्टदाहन केशवम् । जय विश्वनाथ कृपाल विष्णो विश्वपाल विश्वम्भरम् । जय ब्रह्म शक्ति सुरेश रामः रावणादि विदारणम् । निज जनन हित यह रूपधास्यो जय कृपाल वराहणम् । अब करहु नाथ सनाथ मोकहँ विश्वकर्ता सुन्दरम् । जय सूर्य चन्द्र अकाश कर्ता आपहीके भूषणम् । जयराम लक्ष्मी सहित वन्दौं सकल जगके कारणम् । निज जननहित यह रूपधास्यो जय कृपाल वराहणम् ॥

सो० अस्तुति सुनिवाराह घुड़क्यो शब्द अथाहकरि ।
धरादाबि मुखमांह लै निकस्यो एक पुष्प सम ॥

दो० देखि धरणि जन लोक सब दुन्दुभि दई बजाय ।
लागे अस्तुति करन सब श्री वराह गुण गाय ॥

चौ० करहु क्रोध अब शान्ति बराहा । धरहु धरणि सुन्दर शुभगाहा ॥ हरषे सुनि मुनि गणकी बानी । धस्यो धराजल ऊपर ठानी ॥ पुनिनिजरूप विष्णुप्रभु लीन्हा । सकल जगतको आनँद दीन्हा ॥

दो० रूप धर्‍यो प्रभु मच्छको सो अब कहौंबखानि।
पढ़िसज्जनहियहर्षकरि पियहुमधुररस मानि॥
शंखासुर यक दैत्य भो वर दानी सुर केर।
जलधितनयअतिबलीवह जीतेसिभुजबलटेर॥
सो० सकल धराको जीत इन्द्रासन परचढ़ि गयो।
कीन्हो युद्धअदीत महाबली कहिजात नहिं॥

चौ० करिके युद्ध महाभटभारी। लैगयो वेद उठाय हँकारी॥ सोलै जलधि माहँ तेहि बोरेसि। फेरि सैन अगणित तहँ जोरेसि॥ लैकर सेन चला हँकारी। जीत्यसि बहुसुर हांकि प्रचारी॥ यहिविधि सदा करै अन्यावा। तब सुर सब मिलि भेद बनावा॥ सकल देव मिलि शुभ मतकैकै। गये विष्णुके धामहिं मिलिकै॥ अस्तुति करन लगे सब मिलिकै। तब नारायण बोले हँसिकै॥ अतिप्रसन्न हम तुम पर भे हैं। जो मांगो सो तुरतै देहैं॥ तब सबसुर बोले हर्षाई। नाथ अनीति कही नहिं जाई॥ जलधि तनय शंखासुर जानो। भयो दैत्य इक बली प्रमानो॥ सकल धरासो जीत्यसि आई। अति बलिष्ठ कछु वरणि न जाई॥ लै गयो वेद वाहु बरजोरा। सो लै जाय जलधि में बोरा॥ ताको आप करौ संहारा। अरु काहूसे मरै न मारा॥ सुनि प्रभु विहँसि कह्यो सुरपाहीं। मारब ताहि बिलँब कछु नाहीं॥ सकल जाहु अपने अस्थाना। हम समुद्रका करब पयाना॥ सुनत देव अस्तुति तब कर कर। आये अपने सब सुर घर घर॥ अति कृपाल सुन्दर रघुराई। भक्त बछल मुनि जन सुखदाई॥

कुण्डलिया॥

धरि मत्स्यक अवतार प्रभु गयो समुद्र मझार ।
ढूंढ़ि ताहि तुर्तैलियो श्रीपतिराम उदार ॥ श्रीपति राम उदार तुर्त शंखासुर मारयो । सकल जनन हितकार सुरन के दुख सब टारयो ॥ लैकर वेदप्रचारि कियो रूपहि धरि मत्स्यक। रहे सदा भगवान विप्र गो भक्तन रक्षक॥

दो० मत्स्यरूपको छोड़िपुनि प्रभु भयो अन्तर्द्धान ।
कथा विदित यहजगरही ताको कियो बखान॥
जो याको मनसे पढ़ै अथवा सुनै सुजान।
चारि पदारथ मिलहिं ते पुरवहिं श्रीभगवान॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णविहारीशुक्लबदर्कानिवासि विरचितेवाराहवमत्स्यअवतारकथा वर्णनोनामप्रथमोऽशः १ ॥

दो० कहौं कथा अब कच्छकी सुनहु सुजन दै कान।
ज्यहिविधिलैअवतारप्रभु मथ्यो सिंधुसुखदान ॥
दैत्य बढ़े जब भूमिपै करैं अनित्य महान ।
अन्नधन्न जो धरणिपर हरयो सकलदुखदान ॥

क० करत अनीति चहुंदिशि दैत्य घूमि घूमि तब सुर सर्वमिलि मंत्र एक ठानिकै। गये जहँ केशव कृपानिधान दीनबन्धु पाणि जोरि शीशनाय विनती सुनाय कै॥ बोले प्रभु हँसि कहो देव सर्व प्राणप्रिय कौन हेत आयो सो सुनावो गुण गायकै। अति हर्षाय बोले देव वृंद सब मिलि नाथ जेहि काजआये सो कहैं बखानिकै॥

तोमरछन्द॥

दैत्य जे बलवान। नाहिं डरत कालहु जान॥

हरिलियो सब धनधान। जोहोहि पैदाआन॥

दो० ताकोकरो विचार प्रभु जेहिविधि दुखसबजाय।
सकल प्रजा आनंदकरि बसे कष्ट बिसराय॥
हँसिबोले प्रभु प्राणपति मति ऊबौ सबदेव।
सकल विघ्न जेहिविधिहरैं सोइकरबहमभेव॥
तुम दैत्यन सों प्रीतिकरि रमौजलधिपै जाय।
कच्छरूप तहँधारिकै मथब सिन्धु हम आय॥
वासों निकरी सुधारस और औषधी आय।
जाके पानकिये सुभग अजर अमर ह्वै जाय॥
सुनत वचनप्रभुको विहँसि सकल देवताजाय।
सिन्धु समीप निवास करि रहे मोद उरछाय॥
तब श्रीपति भगवानने लियो कच्छ अवतार।
सकल चराचर देवके हर्‌यो दुःखको भार॥

सो० मथ्योसिंधु अरगाय चौदह रत्न निकारिलिय।
मणिरंभा सुखदाय धन्वंतरि अरु कल्पतरु॥
अमीशंख गजराजि शशिधन्वा अरु वारुणी।
कामधेनुशुभवाजिकौस्तुभमणिपुनिविषप्रगट॥

चौ० कच्छप रूप छोड़ि सुखदाई। विष्णुरूप ह्वै प्रगट्यो आई॥ यथायोग्य विधि सबको दीन्हा। आपु ग्रहण लक्ष्मीको कीन्हा॥ पुनः भयो प्रभु अन्तर्द्धाना। सहित लक्ष्मी कृपानिधाना॥ निज निज थान देव सब आई। ह्वै प्रसन्न दुंदुभी बजाई॥ यहि विधि धरत विष्णु अवतारा। सकल जगत के प्राणअधारा॥ अति कृ-पाल सन्तन सुखदाई। प्रभु लीला कछु वरणि न जाई॥ जो पढ़ि हैं याको चितलाई। विष्णु कृपा धन लक्ष्मी

पाई ॥ अन्तकाल सुरपुरमहँ गेहा। या महँ नहिं तन-को संदेहा ॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णविहारीशुक्लबदर्का निवासिविरचितेकच्छअवतारकथावर्णनो नामद्वितीयोंऽशः ॥ २ ॥

दो० बहुरिकहौंअवतारप्रभु जेहिविधि लीन्हों आय।
जन प्रह्लाद उबारेहु नरहरि रूप बनाय ॥

चौ० हिरण्यकशिपु जो निश्चर राजा। करै अखं-डित राज्य विराजा ॥ यकदिन अमरपुरी चढ़ि गयऊ। घोर युद्ध देवन सों भयऊ ॥ हारिमान पुनि भूपर आवा। लज्जित वदन नयन जल छावा ॥ राज्य पाटिको काम बिसारी। नींदत्यागि अतिभयो दुखारी ॥ विगत रैनि कुमुदन कुम्हिलाना। उठि निश्चर वन कियोपयाना ॥ एक चरण ह्वै ठाढ़ सुरारी। वनफल खाय कियो तप भारी ॥ कछुक दिवस तरु पात्रहि खाये। रहा ब्रह्मको ध्यान लगाये ॥ यहि विधि बहुत वर्ष तप कीन्हा। ह्वै प्रसन्न ब्रह्मा वर दीन्हा ॥ जो मांगो सो देहुँ सुरारी। मो हित कठिन कियो तप भारी ॥ सुनि निश्चर बोला ह-र्षाई। जो प्रसन्न तो होहु सहाई ॥ यह वर देहु मोहिं लघुजानी। कौनिउ विधिसों होहुं न हानी ॥ नर अरु देव चराचर जेते। सिद्धक चारण गुह्यक तेते ॥ इनके हाथ होहि वधनाहीं। पृथ्वी आसमान के माहीं ॥ रैनि दिवस अरुभीतर बाहर। कौनिउ विधि नहिं होइ सँ-हारण ॥ और एक मागौं वरदाना। होहि पुत्र यक चतुर सुजाना ॥ दैवर विधि भयो अन्तर्द्धाना। निश्चर गयो

ग्राम हुलसाना ॥ कछुक कालबीते जब आई । ताकेपुत्र भयो शुभताई ॥ अति आनँदकरि वाद्यबजाये । सहित धान्य भण्डार लुटाये ॥ सुतको नाम धरयो प्रह्लादा । भयो कुँवर अति जग अह्लादा ॥ राम भक्त अति परम पियारा । सकल जगतका प्राणअधारा ॥ वर्ष पांचका जब सुत भयो । निश्चर पढ़न हेत तेहि कह्यो ॥ संडामर्का कुलगुरु जाये । निश्चर पतिने तुरत बुलाये ॥ सुतप्रह्लाद प्राणसमप्यारे । सौंपहु तुमहिं तनक ये बारे ॥ देहु पढ़ाय बढ़ाय सप्रीती । स्वल्प पढ़ावहु राज्य कि नीती ॥ लै गुरु भवन आपने गयऊ । भरिपाटी शिक्षा लिखि दयऊ ॥ पढ़हु लाल ये चित्त लगाये । खेल कूद की सुर्ति गँवाये ॥

कुंडलिया ॥

सुनि स्व वचंन प्रह्लाद प्रिय बोले मधुर समान । नाथ क्षमहु अपराध मन मैं कछु करौं बखान ॥ मैं कछु करौं बखान सुनहु स्वामी चितलाई । लिख्यहु आपजो तरुत हमैं यह कछुनाहिं भाई ॥ एक रामसे काम और कछु मनहिं न कै गुनि । मनमें क्रोधित भयो गुरुप्रह्लाद वचन सुनि ॥

दो० अरेकुंवर अबना लियो भूलिहु हरिका नाम ।
जो हम सिखलावें पढ़ो धरे चित्त अभिराम ॥
विद्या सबसों सारहै सोविद्या पढ़ि लेहु ।
राम नामको छांड़िकै राजनीति चितदेहु ॥
बहुविधिसमझायोगुरू कुंवर न आयोख्याल ।
पकरि बांहलैचल्योजहँ हिरण्यकशिपु भूपाल ॥

तोटकछंद ॥

मैं सिखायो नाथ याहि राज नीति हेरिकै । यो पढ़ै है रामको समस्त काम छोड़िकै ॥ हारि मैं गयो सिखाय यो न मान नेकहूं । उल्टि ज्ञान देहि मोहिं राम नाम टेकहूं ॥ सुनि नृपाल हिय लगाय सूंघि शीश बोलिकै । ज्यों पढ्यो प्रत्यक्षमें कहौसो भेद खोलिकै ॥ दीन ज्वाब सुमिरि राम सुनहु भूपिपालके । एकराम है अधार प्राणहूसे प्यारके ॥

दो० सुनत वचन प्रह्लाद के बाढ्यो क्रोध अपार ।
फेंकिदियो निज गोदसे बहुरिदियो तेहिमार ॥
मंत्री समुझायो नृपति करहु न क्रोध महान ।
यासोंअति तकसीर भै फेरि जपिहिनाहिं आन ॥
सुनि निश्चरप्रह्लादको सौंप्यसिगुरुहिबुलाय ।
याहि पढ़ावो प्यारसों राजनीति सिखलाय ॥
लै आये गुरुभवन महँ दीन्हों बहुत प्रबोध ।
फेरि रामको जपकियो तब गुरुभयो सक्रोध ॥

सो० लैआये नृपपास मोर पढ़ायो नहिं पढ़ी ।
तुमसिखवो कछुतास जोकदापिमानै अबुध ॥

चौ० हे ममसुत प्रह्लाद पियारे । पढ़ौ युद्ध विद्या गुण भारे ॥ छोंड़हु रामनाम बिसराई । है ममवैरी वह दुखदाई ॥ बोले विहँसि सुमिरि रघुराई । नाथ रामपढ़िबे चितलाई ॥ सुनि नृपबोल्यो क्रोध अपारा । यहि बालक पर करौ प्रहारा ॥ आज्ञापाय दूत उठिधाये । पकरि कुंवर गिरिमाहँ गिराये ॥ गिरे फूल सम नीचे आई । करि सहाय लीन्ह्यो रघुराई ॥ यहिविधि दीन्हेउ क्लेश अपारा । रामआय तहँ कीन्ह उबारा ॥ पुनिकरि क्रोध पकरि मँ-

गवायसि। कुंवरदेह खम्भा बँधवायसि॥ कहु अब राम कहांहैं तोरे। दे बतलाय दुष्ट निज मोरे॥ बोले कुंवर सुमिरि रघुराई। नाथ रामव्यापक सबठाँई॥ हम औ तुम मा राम विराजै। जेहि मम बांध्यो वहूमें छाजै॥ सकल सृष्टि नारायण केरी। हैं व्यापक कृपाल तहँ मेरी॥ सुनत नृपति कीन्ह्यो रिस भारी। कहां राम हैं लेहिं उबारी॥ असकहि खड्गखैंचि तें लीन्हा। डोली धरा शब्द अति कीन्हा॥ ताही समय खम्भको फारी। नरहरि रूप लियो सुखकारी॥ निश्चर रूप देखि भय पावा। जानिसि काल मोर नगिचावा॥ नहिं यह देव नरनमा कोई। मोरि प्राण निश्चय हरि लेई॥ रैनिदिवस नहिं भीतर बाहर। खम्भ फोरि निकसा नरनाहर॥ गर्जि नृसिंह तुर्त त्यहि गह्यऊ। बीच जांघ बैठारत भयऊ॥ नखन तासुको उदर बिदारी। आंत कलेजा लियो निकारी॥ लियो पहिरि माला समताको। कियो अभय प्रह्लाद ललाको॥ गरज्यो शब्द महाभयकारी। भये सकल अति जीव दुखारी॥ पुनि प्रह्लाद विनय बहु करेऊ। तब प्रभु क्रोधशांत सब भयऊ॥ गहि प्रह्लाद गोद बैठारी। बहुत नीति सिखयो सुखकारी॥ फेरि भयो प्रभु अन्तर्द्धाना। तासु कथा मैं कीन बखाना॥ ऐसे प्रभु कृपाल सुखदाई। भजहु तासु सब काम विहाई॥ पढ़ौ सुजन याको चित धरिकै। हियेमांझ प्रभु सुमिरण करिकै॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णविहारीशुक्लबदर्कानिवासिविरचितेनृसिंहावतारकथावर्णनोनामतृतीयोऽशः ३॥

दो॰ अय त्रेता अवतार भे मुनिजनके सुखदाय।
वर्णों ताको सार कछु शारद शेष मनाय॥
बढ़्यो भार जब धरापै नारायण हियजान।
परशुराम अवतार तब धऱ्यो धरापै आन॥

पद्धरीछन्द॥

जमदग्नि मुनि जेहि नाम भाषैं तासु घर अवतार लिय। इक्कीसबार सँहारि क्षत्री धरा भार उतारदिय॥ जो था सहस्त्रावाहु ताहि कुठारपाणि विनाशकिय। यहि भांति और सकाम कीन्हे सकल जगकेप्राण प्रिय॥

दो॰ अब भाषौं ज्यहि विष्णु प्रिय बावनरूप उदार।
बलिसे पृथ्वी दानलै शक्रहि दिय सुखकार॥
राजाबलि विख्यात भो सकल धराके माहिं।
सकल भूमिको राज्य लै करै नीति निपुणाहिं॥
यकादिन मन अनुमानिकै निर्ज्जन वनमें जाय।
कठिन तपस्या किय तहां शाक मूल फल खाय॥

चौ॰ जब बलि कियो तपस्या भारी। ह्वै प्रसन्न विधि कह्यो प्रचारी॥ जो इच्छा वरमांगौ कोई। सकल कामना पुरवौं सोई॥ करि विनती बोले बलिराजा। ह्वै प्रसन्न जो अतिमहराजा॥ तौ मांगतहौं यह वरदाना। देव हर्षिकरि कृपानिधाना॥ तीनोंलोक राज्य मैं करहूं। अजर अमर होजाऊँ न मरहूं॥ बोले विधि सुन प्राण पियारे। एक बात हमकहैं सुखारे॥ जो शतयज्ञ करौ तुम राजा। तौ वरदान होहि शुभ छाजा॥ असकहि विधि भै अन्तर्द्धाना। राजा पुरआयो हुलसाना॥ करै लाग शुभयज्ञ सुखारे। एक रही बाकी जब प्यारे॥

डरे देव शक्रहु कंपाने। गे प्रभुपास महाभय माने॥
नाय शीश विनती बहु कीन्हा। तब प्रभु अभय तिन्हें करिदीन्हा॥ पुनः आप प्रगट्यो भुवआई। बावन रूप धर्यो सुखदाई॥ जहँ बलि करैं यज्ञ शुभ ठानी। बावन तहां पहूंच्यो आनी॥ साढ़े तीनि पैग भुइँ मांगी। तब बलि कह तुमबड़अभागी॥ जो तुममँगते भुइँप्रणठानी। देत्यों में आधी रजधानी॥ पै मोहिं एक अँदेशो आवे। सो हम तुमसों प्रगट बतावें॥ दिव्यरूप तुम फिरौ सुखारी। सकल जगतके प्राणअधारी॥ तुम्हँ देख मोहै सबलोका। होतै दर्श मिटै सब शोका॥ दिव्यरूप अक्षि बरैं मसाला। भौंह बाहु अति बनी विशाला॥ कोटि काम अवलोकत लाजैं। कटि देखत केहरिगण भाजैं॥ की तुम इन्द्र वरुण मा कोऊ। की नारायणहौ तुमसोऊ॥ दीन्हो दर्श मोहिं तुम ऐकै। मैं कृतकृत्य भयों मुद लैकै॥ नापिलेहु यह मैंवरदीन्हा। बावन सुनत रूप बड़कीन्हा॥ नाप्यो तीनिलोक त्रयपदते। पुनिबावनप्रभु बोले बलिते॥ आधोपैग और म्वहिं दीजै। नाहिं तो सत्त छांड़ि मुदलीजै॥ तब बोले बलि भययुत कांपी। नाथ पृष्ठ लीजै मम नापी॥ लियो नापि आधापग पृष्ठा। पुनि बोले बलिसे प्रभु श्रेष्ठा। हौं प्रसन्न अति मैं बलि तुम पर। जो चाहौ सो मांगौ हमपर॥ तब बलिकह्यो नाथ सुनि लीजै। सदाआय म्वहिं दर्शन दीजै॥ वरंब्रूहि कहि अन्तर्द्धाना। राज्य शक्रदीन्ह्यो सविधाना॥ ऐसे करत सदा प्रभु रक्षक। जब जब गाढ़परै परतक्षक॥

दो० भजो ताहि चितलायकर हे सज्जन सुखकारि।

जहां कष्ट परिहै विकट रक्षहिं तहँ त्रिपुरारि ॥

इतिश्रीज्ञानश्राभूषणेकृष्णविहारीशुक्कबदर्का निवासिविरचितेपरशुरामवबावनश्रवतार कथावर्णनोनामचतुर्थोऽशः ॥ ४ ॥

दो० आगम जानि वसंतकी शीत लियो धनुतानि ।
खैंचि श्रवणलों चापको छोंड्यो शरसन्धानि ॥
तब वसंत अतिक्रोधकरि गरज्यो सिंहसमान ।
दमक्योदामिनिकीसदृश हन्यो खैंचि बहुबान ॥
पुनः धनुष टंकोर करि क्षोभन बाण चलाय ।
गाफिल करिकै शीतको लियो मुसुक बँधवाय ॥

आल्हाछन्द ॥

हाथ हथकड़ी पायन बेड़ी गरेमदीन्ह्यों तौक डराय ।
झण्डा फेरि दियो जीतनको गद्दी बैठि बसंते राय ॥

दो० लागत मास वसन्त के फूले टेसू फूल ।
मधुप गुंजरैं शोरकरि बैठि द्रुमनके कूल ॥
खिलीसरोवरमें कली सुन्दर ऋतुकोपाय ।
बौरे आंब अघायकर फूले विटप बनाय ॥
अवधनगरकीवानिता ऋतुवसंतको पाय ।
गावैं होली ठूमरी बीन मृदंग बजाय ॥

चौ० नृत्यकरैं डफ भेरि बजाई । होली होली होली गाई ॥ किटकिटकिटकिट मँजिराबाजे । गुम्मुकुगुम्मुकु तबला छाजे ॥ ठुम्मुकुठुम्मुकु वनिताराजे । झुम्मुकुझुम्मुकु घुंघुरू बाजे ॥ करैं केलि सब ऋतुको पाये । रंग गुलाल कि धूम मचाये ॥ लागो मास चैत सुखकारी । भे प्रसन्न सब नर अरु नारी ॥ नौमी शुक्कपक्षकी पाई ।

उमहे देव अयोध्या आई ॥ लै विमान सुन्दर शुभ धाये। अवधपुरी के ऊपर आये ॥ देहिं दुंदुभी भेरि बजावें। सेवा निज निज आपु जनावैं ॥ मध्य दिवस जब भयो सोहावन। अतिनहिं घाम शीत नहिं पावन ॥ तबहिं विष्णु लीन्ह्यों अवतारा। कौशल्या के प्राणअधारा ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

दिय भाल केशरि तिलकसोहैं शंख चक्र विराजहीं। उरमाल सुभग विचित्र राजे श्रवण कुण्डल छाजहीं ॥ पटपीत केशरि रंग सोहै हाथ धनुष सोहावहीं। शुभ मुकुट मस्तक बँधाराजै देखि छवि सुरलाजहीं ॥

दो॰ देखि रूपअति मोदकरि बोली मातु विचारि।
सकल जगतको देहुसुख शिशुरूपानिरधारि ॥

चौ॰ भये बाल्य प्रभु रोवन लागे। कुहुंकि कुहुंकि आनँद सों पागे ॥ सुनत सकल रानी उठि धाई। लिय उठाय कनियां में लाई ॥

दो॰ पुनः देवतन वृष्टिकी श्वेत पुष्प वरषाय।
हनि दीन्ह्यों दुंदुभि गगन भेरि मृदंगबजाय ॥

सो॰ करैं अप्सरा गान भाग्य सराहैं अवध की।
जहँ श्रीपति भगवान लै अवतार प्रत्यक्षभे ॥

चौ॰ सुनि दशरथ नृप अति सुख पावा। भे आनँद कछु वरणि न जावा ॥ लैमोती मूंगाके गुच्छा। दियोलुटाय भंडार सइच्छा ॥ डंका बजन द्वारपै लागो। सकल अयोध्या आनँद पागो ॥ सखियांकरैं मंगलाचारा। अति आनंद भयो त्यहि बारा ॥ तोरण बन्दनवार विराजें। द्वारद्वार कञ्चन घट छाजें ॥ यहि विधि बीति गयो षट

मासा। नित नव मंगल होहिं प्रकासा॥ सकल कर्म सुतके नृप कीन्हा। जो वसिष्ठ आज्ञा करि दीन्हा॥ राख्यो नाम राम अस प्यारा। सकल जगतका प्राणअधारा॥ नृप पटरानी नाम सुमित्रा। ताके भेलक्ष्मण अरिहंता॥ सुन्दरिरूप केकयी रानी। ताके भरतभये सुखदानी॥ दिन दिन बढ़त करत प्रभु लीला। ब्याह योग्य जब भयो सुशीला॥ मैथिलपुरी परम अति पावन। तहां जनकतनया के कारन॥ भयो स्वयंवर अतिहि स्वहावा। जनक नृपतियकधनुष मँगावा॥ जो याको टूरै नृपकोई। बरी जानकी कन्या सोई॥ सुनि प्रण देश देशके राजा। गयो जनकपुर सहितसमाजा॥ कौशिकमुनि लै लक्ष्मण रामा। गयो धनुषमखदेखनकामा॥

दो० गर्व दूरिकरिनृपनको लियउठाय प्रभुचाप।
खंडकियो द्वै ताहिके हस्यो सकल सन्ताप॥

चौ० दशरथ नृप जब सुने सुखारी। लै बरात पहुंचे तहँ भारी॥ करि विवाह आनँदसों छाये। लौटि अवध पुर सबजन आये॥ गुरू वशिष्ठ पूज्यजे कुलके। बोले दशरथ नृपसों हितके॥ द्योयुवराज रामको आजू। पालैं प्रजा करैं शुभराजू॥ यह कहुं वचन मंथरासुनिकै। केकयसुतासों बोली हँसिकै॥ होतरामयुवराजआजुहैं। करत गान बन्दीमागधहैं॥ सुनि केकयी बहुत सुखमाना। अहोभाग्य कहि सुयश बखाना॥ सुनि मंथरारोष कर बोली। बहु विधि समुझायो मुँह खोली॥ बारहवर्ष राम वनवासा। भरत राज्यको करैं प्रकासा॥ बहु केकयीनृपति सों बोली। दुष्ट वचन अनहितके खोली॥ पू-

वें हमें जो द्वै वरदीन्हा। सोहम आजु चहतिहैं लीन्हा॥ द्वादश वर्ष राम वनवासू। भरतराजको करैं प्रकासू॥ सो सुनि नृपति विकल ह्वै गयऊ। मरण समय के सदृश भयऊ॥ सीताराम लषण सुखकारी। गये वनहि अति आनँदधारी॥ पंचवटी जहँ परम सोहावन। तहां बसे रघुवर मनभावन॥ तहँ निश्चर पति जो लंकेशा। हेरेसि जानकी धरि यति भेशा॥ भे प्रभुके सहाय सुग्रीवा। लैसह सेन चले बलसीवा॥ लंका घेरिलियो चहुं जाई। भई तहां अति विकट लराई॥ भये राक्षस तहँ संहारा। धराभार प्रभु दियो उतारा॥ पुनि प्रभु कियो धनुष टंकोरा। माऱ्यो बाण रावणहिं जोरा॥ लागत बाण मृतक ह्वै गिरयऊ। व्योमसुरन दुंदुभिको हन्यऊ॥ जाको पार न पावै कोई। शिव चतुरानन आदिकजोई॥ सो प्रभु करैं मनुजकी लीला। भक्तवश्य अतिपरम सुशीला॥ मारि रावणहि लौटे रामा। सहित जानकी लक्ष्मण धामा॥ जादिन राम अवधपुर आये। भयोमोद जो वरणि न जाये॥ मिलेराम मातहिहितकारी। पुरजन सकल नरन अरु नारी॥ भाआनँदको वर्णै पारा। भयो अवध अति परम सुखारा॥ जानि मुहूर्त शुभग अति पावन। गुरु वशिष्ठबोले मनभावन॥ गद्दीहोइ रामकी आजू। सकल सखिन मिलमंगलसाजू॥ जबमुहूर्त आवासुखदाई। गद्दीबैठि हर्षि रघुराई॥ ताकी छविको वर्णै पारा। जाहि बखानत शेशहु हारा॥

दो० असप्रभु दीनानाथ हरि भक्तन वश्य कृपाल।
सकल सृष्टिको भारहरि मेटयहुदुखजंजाल॥

सो० ताहि भजहु मनमूढ़ जो जगमें कल्याण चहु ।
होहुभक्ति आरूढ़ हेमन मूरख समुझरे ॥

हरिगीतिकाछंद ॥

जो पढहिं याहि लगाय चितको चारिफल सोपावहीं । दुःख दरिद्रहि छोंड़िके वैकुंठको पगधारहीं ॥ जहांनहिं कहुं काल व्यापै सर्व्वसुःख विराजहीं । बीच देवन के सो मानुष परम गतिको पावहीं ॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णविहारीशुक्लबदकांनि-
वासिविरचितेश्रीरामअवतारकथावर्णनो
नामपंचमोंऽशः ५ ॥

दो० द्वै द्वापर अवतार भे कहौं तिन्हें समुझाय ।
सुनहुमनुजचितलायकर हियेसुमिरिरघुराय ॥
धर्यो रूप प्रभु बौद्ध को गया क्षेत्रमें आय ।
त्रिपुरासुरकोवधकियो नास्तिकमतहिचलाय ॥
बहुरिकहौं व्रजचन्दको जिमि प्रगटेव्रजआय ।
धरणि उतारनभार हित गोपिनके सुखदाय ॥

चौ० होहि अनीति महाभयकारी । बाढ़ेदैत्य अमित बलभारी ॥ धरा भार नहिं सक्यो सम्हारी । गैब्रह्माके पास दुखारी ॥ विधिलै धराविष्णुपहँगयो । जोरिपाणि करठाढ़ रह्यो ॥ बोले नारायण केहिकारन । आयो धरा सहित चतुरानन ॥ बोले विधिअति विनयबखानी । सुनहु कृपाल विष्णु ममबानी ॥ नाथ दैत्य अति करैं अनीती । सकल बलिष्ठ धराको जीती ॥ सुरमुनि देहिं दुःख अति भारी । धराभार नहिं जात सँभारी ॥ त्यहि कारण आये तवपासा । धरणी भारउतारन आसा ॥ सुनत प्रभू दो

केशउखारे । एकश्वेत अरु दूसरकारे ॥ ये दोबार धरा अवतरिहैं । सकलदुष्टको येसंहरिहैं ॥ श्यामबारसे कृष्ण बखाने । श्वेतबार हलधर जगजाने ॥ ह्वै हैं ये हमारि शुभअंशा । सकल दुष्टको नशिहैं वंशा ॥

दो० सुनत वचन हरिके प्रियद अजगे अपने धाम ।
धरणी हरि अवतरणकी आशा आठौं याम ॥

चौ० यहां कंस मथुराका राजा । यकदिन जोर्यो सकल समाजा ॥ बोला सब सों प्रीति बढ़ाई । करहु मंत्र यक सब मिलि भाई ॥ भइ मम भगिनी ब्याहन योगा । ढूंढ़हु वर याके संयोगा ॥ बोले सकल मंत्र यक ठानी । अति धीरज सों मतिके खानी ॥ शूरसेन मथुरा के माहीं । तासु पुत्र वसुदेव कहांहीं ॥ अति उत्तम वर योग सुखारी । करौ ब्याह तासों छविभारी ॥ सुनत वचन गदगद भयो राजा । बोले विप्रको टीका साजा ॥ सो मथुरामें दियो पठाई । बहु प्रकार की विनय लिखाई ॥

दो० भई लग्न जब ब्याहकी अति आनँदको पाय ।
लै बरात वसुदेव तब कंसद्वार पर आय ॥

चौ० भयो ब्याह अति परम उछाहा । दायज बहुत दियो नरनाहा ॥ कियो बिदा आनँदसों छावा । तब अकाश वाणी यह गावा ॥ याके अष्टम गर्भ प्रकाशा । करिहैं कंस तोहिंसो नाशा ॥ यह सुनि कंस बहुत डरपायो । खैंचि खड्ग मारनको धायो ॥ तब वसुदेव कहा समुझाई । याके पुत्र होहिं जो राई ॥ सो सुतलै तुम्हरे हम पासा । ऐबे तेहि क्षण सहित हुलासा ॥ उनको आप विनाश करावें । यामें कछु सन्देह न पावें ॥ सुनत कंस

लौटा दुखदाई । यहां बरात धाममें आई ॥ कछुक काल में सुत यक भयऊ । लै वसुदेव कंस को दयऊ ॥ यहि विधि जब सुत पैदाहोवैं । लै वसुदेवकंसकोदेवैं ॥ अष्टम गर्भ भयो भगवाना । तब देवकी अतिहि सुखमाना ॥ होय चतुर्भुज दर्शन दीन्हा । सुफल मनोर्थ जक्कको कीन्हा ॥ बोले प्रभु अति गह्वर बानी । वासुदेवसों सुखकेदानी ॥ नन्दरायकी यशुदारानी । ब्रजमें बसै अहीरि सोजानी ॥ ताके तनया यहिक्षण भैहै । कछूनाहिं सुधि वाको ह्वैहै ॥ हमको आप वहां पहुंचावो । कन्या लै नृपकंस देखावो ॥ सुनत वचन अमृत के साने । कृष्णछोंड़ि कन्यालै आने ॥ सो कन्या लै कंसहि दीन्हा । हर्ष समेत नृपति त्यहि लीन्हा ॥ गहि पटक्यसि पत्थरपर जाई । कन्या छूटि अकाश स्वहाई ॥ अब आगे कछु कहौं बखाना । ज्यहि विधि नन्दराय सुखमाना ॥ भये कृष्ण यशुदाके जाये । होनलगे आनँद बधाये ॥ उत रोहिणिके हलधर भैया । होत बजी आनन्द बधैया ॥ सखियां करैं मङ्गलाचारा । लै कपूर आरती उतारा ॥ जो सुख भयो नन्दके माहीं । सो कछु मो वर्णोनहिं जाहीं ॥ सुतको नाम कृष्ण अस भाख्यो । औ असंख्य नामनको राख्यो ॥ लागे दिन दिन बढ़न विहारी । ज्यों राकाशशि बढ़ै सुखारी ॥

दो० तोतरितोतरि बातैं कहैं घुटरुन चलैं सुजान ।
देखत सुख दूनो बढ़ै जो नहिं बनै बखान ॥

सो० सबब्रजवनिता ग्वाल देखिदेखि सुखपावहीं ॥
भयो नन्दको लाल को छवि बर्णै तासुकी ॥

चौ० यकदिन प्रभु पलना पै सोवैं । नन्दमहरितहँ

दही बिलोवैं ॥ औचक एक निशाचर आयो । कंस नृपति ने ताहि पठायो ॥ सो प्रभुको लिय गोद उठाई । गयो अकाश महादुखदाई ॥ ताको घींचदाबि प्रभुमारा । द्वै छाती सवार भुवडारा ॥ गिरा धरणि पर अति भयकारा । मुखसे छूटि रुधिरकी धारा ॥ हरबराय दौरीं नँदरानी । देखि निशाचर अतिभयमानी ॥ लियो कृष्ण को गोद उठाई । बारबार चूमति हियलाई ॥ अतिडर युक्त महर सब ग्वाला । बारबार चूमहिं नँदलाला ॥ आजु भये सब देव सहाहीं । बचिगो कुंवर निशाचर पाहीं ॥ यहि विधि करत सदा हरि लीला। भक्तबछल प्रभु परम सुशीला ॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णविहारीशुक्लबदर्का
निवासिविरचितेश्रीकृष्णअवतारकथा
वर्णनोनामषष्ठोंऽशः ६ ॥

सो० कौन कहै गुणगाय भये सयाने कृष्ण जब ।
देहिंमातुसुखदाय माखनचोरी ब्याजकरि ॥

चौ० बढ़े कृष्ण तब करें ढिठाई । दहीखाय मटुकी ढनगाई ॥ मिलि छोटे गोपन के साथहिं । करि चोरी मटुकी दधि आनहिं ॥ कछुक खाय कछु देत लुटाई । कछु ग्वालनको देहिं बँटाई ॥ देखैं जब ग्वालिनको आवत । सहित ग्वालके तब भगिजावत ॥

दो० यकदिन गयो प्रभातमें मिलिगोपनके साथ ।
दहीखाय मटुकी पटकि व्रजवासिनके नाथ ॥

सो० ग्वालिनि घरमें आय देखै तो व्रजचन्द को ।
दहीखाय ढरकाय भागिचले ग्वहिं पेखिकै ॥

चौ॰ यहिविधि करत सदा हरि चोरी । दही खाय मटुकीको फोरी ॥ देखि सकल अति ब्रजकी नारी । छ-कित होहिं प्रभुरूप निहारी ॥

दो॰ एकसमय श्रीकृष्णने लीन्ह्यो सखा बुलाय ।
माखनचोरी कारने पैठे केहु घर जाय ॥

सो॰ माखनखाय अघाय मटुकी फोर्‍योशब्दकरि ।
सोसुनिग्वालिनिआयपकर्‍योबांहगोपालकी ॥

चौ॰ नितनित तुम माखन ढरकावो । मटुकी फोरि भागि घरजावो ॥ औचक आज मिल्यो ममप्यारे । अति लंगर तुम नन्ददुलारे ॥ तरुणरूप अति मदके माते । दही बहान फिरौ अठिलाते ॥ अब तो आय मिल्यो तुम धाई । कहो कौनगति तुम्हरि कराई ॥ असकहि और गोपिको टेरी । लिय बुलाय सुन्दर सुख गोरी ॥ आज श्याम मम परे हैं फन्दे । नटवर रूप फिरैं छल छन्दे ॥ पुनि बोलीं सब ब्रजकी बाला । हम जानैं तुव गुण नँदलाला ॥ महरि माय तुमको नहिं जानें । जे गुण तुम में हैं ये छिपानें ॥ सो सब कहिहौं महरिसों जाई । नहिं चुपरैहौं गमको खाई ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥

अस कहत सब ब्रजवानिता गहिहाथ फिरि बोलत भई । तुम नन्दलाल अहीरके चोरी करनमें मनदई ॥ नहिं नेकु मानो पैठिजावो खाय मटुकी फोरही । कछु आप खाय लुटाय देवो नित्य माखन चोरही ॥

दो॰ बड़े भये तुम येतने माखन चोरी खाय ।
अजामिल्योममधाममें पकर्‍योंतोहिंकन्हाय ॥

सो० अतिलंगर अति ढीठ कहोनमानो नेककछु।
माखनखाव अडीठ देखितुतैं भजिजावतुम॥

चौ० नेक निकारी हौ तुम रीती। यासों तुम्हरी जाय प्रतीती॥ नन्दमहरके हौ तुम ढोटा। माखनखाय भयेहौ मोटा॥ सो तुमको हम नेकु न डरिहैं। एक कहौ तौ बीसन कहि हैं॥ कबसे तुम बड़भये कन्हाई। जो इतनी करते लँगराई॥ ओई कान्ह हवो तुम प्यारे। गोद खिलावैं तुमहिं दुलारे॥ सो प्रभु और भयो नहिं अबहीं। वोई हौ तुम जो थे तबहीं॥ औरै काज आप इत आवो। खायदही माखन ढरकावो॥ जो कहुं सूना घर मिलजावै। तौ तुम्हरी औरहु बनिआवै॥ सबगुण हम तुम्हरे प्रभु जाने। सकल श्रेष्ठ तुमको हममाने॥ सो तुम कान्ह करो दधि चोरी। सबके ऊपर डारि ठ· गोरी॥ और बाममोको नहिं जानो। मैंहौं अति चञ्चल प्रभु मानो॥ जसतुम लंगर तस मैं ढीठी। तुमसों मोसों भई अनीठी॥ देखैं आजु कौन लचि जावै। या तुममें हममें भगिजावै॥ अति दधिखाय भयो तुम माटे। आजु निकारों सो नँदढोटे॥

दो० भागे भागि न पाइहौ बचिहौ नहीं छिपाय।
अतिदृढ़ पकरेहौं तुम्हें लंगरडीठ कन्हाय॥

सो० बहुघरदियो बिगारि करिमाखनकोओढ़रो।
सो मैं नहिं ब्रजनारि जो होवोंवश आपके॥

चौ० कहीं ठगोरी अन्ते डारी। कीन्ह्यो वश तुम कुंजविहारी॥ सो तुम आज दहीके ओढ़र। वहीठगोरी डार्‌यो मोपर॥ मैं नहिं परौं तुम्हारे फन्दे। हे माखन

चोट्टा ब्रजचन्दे ॥ आजु सकल मिलि महरके जाई । कहिहौं मैं तुम्हरी निपुणाई ॥ माखन खाय मटुकि को फोरैं । रूप देखाय चित्तको चोरैं ॥ और जहांतक बनी बनाई । सो सब कैहौं तोरि ढिठाई ॥ महरि डेर मैं नेकु न मनिहौं । एक कहैं तौ लाखन कहिहौं ॥ हम जान्यो तुमहीं को तबहीं । गुड़िया खेल रच्यो प्रभु जबहीं ॥ लै उठाय गुड़िया तुम भागो । बहुरि आय गोपिन सौं मांगो ॥ जो नहिं देयँ तुमहिं पकराई । तो तुम तासोंकरौ ढिठाई ॥ ऐंचि वस्त्र दांतनसों फारो । बहुरि हाथ ता ऊ-पर डारो ॥ वे सब लाज छोड़ि नहिं बोलैं । आपु ताहि घूंघुट बहु खोलैं ॥

दो० असकहिसबब्रजबाममिलि कान्हैबहुतलजाय ।
मिलि आपुस में लै चलीं पकर फेंट अरगाय ॥

सो० जहां यशोमति माय दही बिलोवै रोहिणी ।
तहां पहूंची जाय बोली रिसकर मधु वचन ॥

पद ॥

एरीतुमसुनौयशोमतिमाई । कान्हकीलँगराई ॥ सूने भवन जाय घुसभीतर दहीखाय ढरकाई । कछुनिज खावैं कछुक खवावैं कछुक देहिं बिथराई ॥ गोरस खाय मटु-कि मोरि फोरैं क्षीरदेहिं ढरकाई । अति लंगर तेरो पूत यशोमति बरजोरी मेरीमाई ॥ एरी तुम सुनौ यशोमति माई० ॥ अतिहिअनीति करत मेरिमाई मोसों बरणि न जाई । जो कहुं देखत जात भवन सों घर भीतर घुसिआ-ई ॥ मारिलेत भीतर कि केंवारी हम नहिं जावैं पाई । ऐसो करत कान्ह ब्रज घर घर बरजोरी मेरी माई ॥ एरी

तुम सुनो यशोमति माई ०॥ बोले कृष्ण सुनो मेरिमैया नाहक दोष लगावैं। जो कहुं हाटबाट मोहिं पावें घरभीतर लैजावैं॥ सब मिलि मोको नाच नचावैं गुड़िया खेल खेलाई। दही दूधको करैंबहाना मोंसों पैर मलाई॥ एरी तुम सुनो यशोमति माई ०॥ सुनत यशोमति कृष्णके बैना बोली वचन स्वहाई॥ नाहक दोष लगावो व्रजनारी कुलकी कानि बिहाई॥ मेरे बाल अतिहिहैं छोटा क्या जानै लँगराई। जाहु सकल व्रजवनिता घर घर अब नहिं कान्हा आई॥ एरी तुमसुनो यशोमति माई०॥ येते वचन सुनत नंदनन्दन छोंड़ि दियो मुसकाई। कृष्ण विहारि आश गोपिन की पुरवैं श्रीयदुराई॥ एरी तुम सुनो यशोमति माई कान्हकी लँगराई॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णविहारीशुक्लबदर्का निवासिविरचितेमाखनचोरीलीलावर्णनो नामसप्तमोंऽशः ७॥

दो० राहस कीन्हो सांवरो वृन्दावन में जाय।
अयुतषष्ठदशएकशत गोपिनको ललचाय॥
सो० पुनि भे अन्तर्द्धान देखि गर्व व्रजयुवति को।
यहिविधिकृपानिधान कीलीलाभक्तनबछल॥

चौ० लाग्यो मास सोहावन कातिक। आशा कियो स्वातिकी चात्रिक॥ भानिर्मल आकाशस्वहावन। तारा छिटकि रहे मनभावन॥ खिल्यो चन्द्रमा किरणपसारी। छायरही ताकी उजियारी॥ भइ चिन्तामणि भूमि स्वहाई। मानहुं फर्स बिछी सुखदाई॥ दादुर लियो मवनि कोसाधी। ज्योंभांदव नददेवोबांधी॥ फूलि अगस्तकुमुद

कुम्हिलाने। बाजत्रास ज्यों लवालुकाने॥ भयो स्वहा वन वन सुखकारी। चलैमनोहर त्रिविधबयारी॥ औंचक जागिपस्यो घनश्यामा। बाढ़्यो काम आय सुधि श्यामा॥ पहिरि आभरण मुकुट लगाई। लैवंशी त्रिभुवन सुखदाई॥ चल्यो सघन वन कुंजविहारी। हरष्यो विपिन देखि सुखकारी॥ तहँप्रभु मुरली अधरलगाई। मन्दसुरन सों ताहि बजाई॥ लैलै व्रजवनितनकेनामा। चन्द्रावलि सुखमा अरुश्यामा॥

दो० सुनत तान मोहित भई वंशीध्वनि रहिछाय।
भईं बिहालव्रजवानिता उठीं सबै अकुलाय॥
कहांकहां कहि रहिगईं कहां बजायो श्याम।
कहँ यह बाजी बांसुरी लैलै हमरे नाम॥

सो० फेरिनन्दको लाल धरि अधरन पर बांसुरी।
मास्यो तान विशाल रही पूरि ध्वनिशब्दकी॥

हरिगीतिकाछन्द॥

तब सकल बाला ह्वै बिहाला सुनत ध्वनि चकित भई। तजिकाम धाम बिसारि वनिता प्रेममद मातीठई॥ जे स्ववश पतिके संग बिहरैं छोड़ि वै वनकोगई। कोउ केलि नंगीकरैं हितसो सुनत वंशी आ मिलीं॥ कोउदूध प्यावत तज्यो बालक दौरि आगे को बढ़ीं। कोइगाय प्यावत बच्छलीन्हें छोड़िबे घरसे कढ़ीं॥ कोउ माँगकाढ़े केश बांधे कोउ लगावैं उबटना। सो चलीं तजिकै सकल बाला हाथलीन्हें दरपना॥ कोउ लगावैं पान पतिको कोउ खवावैं स्वामि को। सोछांड़ि धाईं सकल बाला आइमिलि गईं श्यामको॥ कोउ मुकुर देखैं चन्द्र

वदनी कोउ राजैं सेजपर। कोउ पहिरि उलटे वसन
दौरीं आयपहुंचीं रासपर॥
दो० यहिविधितेव्रजवामसब पहुंचींवनमेंआय।
जहां कृष्ण अधरन धरे बंशी रहे बजाय॥
सो० देखिछकितभेश्याम बोलेअमृतसहवचन।
कहौ कहाहै काम केहि कारण आईयहां॥
चौ० लोक लाजकी कानि विहाई। अर्द्धरात्रि तुम
वनमें आई॥ निजपति छोंड़ि कामको त्यागी। उलटे
वसन सवाँरि सुभागी॥ अर्द्धरैनि तुमको डरनाहीं। सब
मिलि आइगयू वनमाहीं॥ कहौ काम मोसों चितलाई।
छोंड़ि धर्म ज्यहि कारण आई॥ तब बोलीं सब गोप
कुमारी। अन्तर्य्यामी तुम वनवारी॥ प्रथम बजाय बां-
सुरी टेरे। लैलैनाम सुरन में मेरे। बहुरिशास्त्र को करौ
विचारा। असनहिं चही तुम्हें नटवारा॥ प्रथम बुलाय
पुनः अपमाने। ताको दोष पुराण बखाने॥ पूर्व कह्यो
नँदलाल बखानी। मोरि शरण आवे जो प्रानी॥ प्राण
तुल्य राखौं मैं ताही। सकल सिद्धि देवौं मैं वाही॥ सो
अब आप कहौ कसबातैं। बाढ़त दुःख सुनतमें जातैं॥
सुनत घचनविहँसे वनवारी। बोलेवचनमधुरसुखकारी॥
दो० तुमसबबालाप्राणसम निश्चयभक्तिहमारि।
परचोलियोतुम्हारहम असकहिहँसेविहारि॥
सो० जितनी ब्रजकीबाम तितने रूपबनाय हरि।
कियो राससुखधाम रासबस्तुमँगवायप्रिय॥
चौ० मिलि द्वै द्वै गोपी करजोरें। बीच बीच प्रभु
करैं किलोरैं॥ ततता थेइथेइगीत अलापें। झोमझोम

झननन नचत तालपैं ॥ सप्तसुरन सों वंशी बाजै। तीनलोक पेखत छविलाजै ॥ देखि छकित भे सकल सुरेशा। लै विमान आये व्रज देशा ॥ भोरिन पुष्प देहिं वर्षाई। होहिं मग्न दुन्दुभी बजाई ॥ काहुक लेहिं पकरि वनवारी। काहुकि देहिं कंचुकी फारी ॥ काहुकगल परहाथ पसारी। लेहिं अङ्कमें भरि वनवारी ॥ काहु कि बिन्दी देहिं बिगारी। पुनि ईंगुरसे देहिं सुधारी ॥ काहुकि तोरि पचलड़ी डारें। बिनि बिनि गुरियां ताहि सुधारें ॥ काहुक धरि लपटाय विहारी। मलैं ताहि मुख चन्द्र निहारी ॥ काहुकि सारी लेइँ उतारी। काहुक मुख चूमैं वनवारी ॥ काहु कि टँड़िया लै गिरिधारी। पहिरें आपुसुधारि सुधारी ॥ काहु कि नकबेसरि उतराई। काहुक कुण्डल लेहिं छिड़ाई ॥ काहु महाउर देहिं मिटाई। करैं कौतुहल मुरलि बजाई ॥

दो० केहुसखिकेबँद टूरिकै अँगियालेहिंछिड़ाइ।
सो पहिरैं नँदसांवरो क्रीड़ा रास मचाइ ॥

सो० भईं हर्षव्रजबाम सुधि नाहीं कछु वदनकी।
बाढ़्यो काम सकाम को छवि वर्णैतासुकी॥

चौ० बढ़ी प्रीति गोपिन उरमाहीं। असन वसनकी सुधि केहुनाहीं ॥ कोइ कृष्णकोलै बैठारी। पुजवैं आश सवस्त्र उतारी ॥ कोइ मुरली को लेहिं छिड़ाई। मन्द सुरन सों ताहि बजाई ॥ कोइ मुकुट लै अपने बांधे। कोइ नैनन की सेनैंसाधे ॥ कोइ मदैं कपोल गहिहाथा। कोइ लपटे प्रभुको लै साथा ॥ कोइ प्रभुको अंकम लपटावैं। कोइ वंशीलै मधुर बजावैं। कोइ पीताम्बर लेहिं

छिड़ाई। अपनी सारी देहिं ओढ़ाई॥ कोइ उतारि बें-
दिया मुखपरसे। बांधै वनवारीको हितसे॥ कोइ पक्कपान
उतारि बँधावें। कोइ अँगिया निकारि पहिरावें॥ कोइ
सुरमाको देहिंलगाई। कोइ अलकें गुँधिदेहिं बनाई॥
कोइ गुँधि गजरा दें पहिराई। कोइ मिस्सीकोदेहिंलगाई॥
दो० कोइकहैं प्यारे प्राणपति बंशी अपनी देहु।
कोइकहैंनन्दकुमारजी कछनी अपनीलेहु॥
हरिगीतिकाछन्द॥
कोइ कहैं प्यारे नन्दबारे मुरलि तनु मुखमें धरौ।
कोइ कहैं गोपी हाथ जोरे राग तन तुम अनुसरौ॥
कोइ कहैं प्यारी ह्वैसुखारी नृत्यका कौतुक करौं। कोइ
कहैं बाला ह्वै बिहाला नैनकी सैनैं हरौं॥
चौ० कोइ कहैं प्यारे मृदँगबजाओ। कोइकहैंतबला
तनु ठनकाओ॥ कोइ कहैं मुरली के सुर गाओ। कोइ
कहैं तनु मुरचंग बजाओ। कोइकहैं मँजिरा लेहु मिला-
ई। कोइ कहैं झांझैं देहु बजाई॥ कोइ कहैं सारंगी गहि
लीजै। कोइ कहैं भेरी की धुनि कीजै॥ कोइ कहैं डफ
गुमकार मचाओ। कोइ कहैं इकतारा को मिलाओ॥
कोइ कहैं सहनाई मोहिं भावै। कोइ कहैं दुन्दुभि नहीं
सोहावै॥
दो० यहिबिधि गोपकुमारि सब भईं प्रेमकेमत्त।
निश्चयजान्योकृष्ण अब भेवशहमरेकन्त॥
सो० सो वनवारी जान लै राधा को संग में।
ह्वैगे अन्तर्द्धान गर्व गरूरी भंजनहिं॥
चौ० लै वृषभान सुता हरषाई। चले कुंजवन कु-

वैंर कन्हाई ॥ मनमें गर्वकियो तब प्यारी । हैं वश हमरे कृष्णविहारी ॥ सकल गोपिकनको तजि दीन्हां ॥ हम को श्याम संगमें लीन्हां ॥ बोली प्रिया बहुरि मुसकाई । ह्वै रूखी यह वचन बनाई ॥ शीघ्र चलतहैं आप कन्हा-ई । मोसों इतो चलो नहिं जाई ॥ कठिनभूमि कोमल पद मेरे । केहि बिधि पंथ चलौं प्रभुहेरे ॥ लेहु श्याम मोहिं कन्ध चढ़ाई । हौं थकिगई दूरि बहु आई ॥ गर्व वचन सुनि प्रभु मुसकाने । बोले वचन मधुर रससाने ॥ चढ़हु कन्धपै राधाप्यारी । असकहि बैठिगये वनवारी ॥ ह्वै हर्षित वृषभानकुमारी । कंध चढ़नको हाथपसारी ॥ भे तब अन्तर्द्धान मुरारी । रहि गइ श्यामा हाथ पसा-री ॥ अहो प्राणपति प्राणअधारा । मनरञ्जन भञ्जन दुख भारा ॥ कहां गयो मोहिं छांड़ि विहारी । मैं विर-हिनि तलफों दुखभारी ॥ वेगि सहाय करो वनवारी । अस कहि मुर्छिगिरी सुकुमारी ॥ आरत वचन सुनत ब्रजबाला । जे तलफैं बिननन्दकोलाला ॥ लियो कुवँरि को हृदयलगाई । कहुप्यारी तू कसबिचलाई ॥ हैं तू अति प्रीतम की प्यारी । कहांगये तोहिंछोंड़ि बिहारी ॥ देखि तोहिं अतिशय दुख होवै । कहुप्यारी तू कस भुइँ सोवै ॥

दो० बोली कुवँरि उसांसलै गोपिनसों सुकुमारि ।
मोहिं छोंड़ि प्रीतमगये निर्दय कृष्णबिहारि ॥

चौ० मोहिं नहीं कछु सुर्तिहै ग्वारी । कहां गये मोहिं छोंड़ि बिहारी ॥ हरे कृष्ण हे कृष्ण पियारे । बेगि लेहु सुधि नन्दकुमारे ॥ लैराधाको सब व्रज बनिता । ढूंढ़न लगीं विपिन सर सरिता ॥ भईं श्रमित सब गोप कुमा-

री । मिलैं नहीं कहुं कृष्णबिहारी ॥ अति विकल तब ह्वै ब्रजनारी । पूंछत फिरैं सकल वनझारी ॥ हे अशोक परशोक निवारन । देहु बताय हमैं मनभावन ॥ हे कदम्ब प्रीतम के प्यारे । तुमकहुँ लखेजात बनवारे ॥ देहु बताय हमैं गिरिधारी । हे अम्बाकी हरि हरि डारी ॥ तुम सब झुकी श्याम के कारन । ह्वै तुम्हरे तरगे मन भावन ॥ हे कचनार खिले तुम फूले । देखे कहुं मनमोहन भूले ॥ हे तुम खिन्नी पाकर वीरा । देखे कहुं तुम हैं यदुवीरा ॥ हौ ठाढ़े तुम सकल स्वहावन । देहु बताय हमैं मनभावन ॥

दो० हे बरगद तुम झंडुले पर स्वारथके काज ।
कीन्हें छाया हौ सुभग दे बताय ब्रजराज ॥
सुनत क्रोधकर दूसरी बोली बाम रिसाय ।
यासों मत पूछो अली देखि हमैं हर्षाय ॥

चौ० एरि सखि चलौ मालती पासा । देइ बताय करी नहिं हांसा ॥ खिली चन्द्रसम है सुखकारी । देखे कहुं है ई गिरिधारी ॥ सुनतलियो मुख तुर्त फिराई । पुनि गोपी बोलीं भय खाई ॥ हे तुलसी प्रीतम की प्यारी । मस्तक धरत तोहिं गिरिधारी ॥ दे बताय हमको ब्रज चन्दा । है तू मनमें बहुतअनन्दा ॥ हे जूही केवड़ा तुम भाई । हमैं देहु ब्रजचन्द बताई ॥ हे दाड़िम अखरोट पियारे । किंशुक तरु ठाढ़े लहकारे ॥ तुमकहुँ देखेहैं प्रिय प्यारे । बंशि बजावत जात मुरारे ॥ हे सब वनके वृक्ष सुखारी । तुम देखे हैं कहुँ गिरिधारी ॥ देहु बताय दासि निजजानी । पुनि बोलीं अति दुखकर बानी ॥

कुंडलिया॥

हे ममप्यारे साँवरो कहांगयो तुम छांड़ि। हमअबला ढूंढ़त थकीं सकल विपिनको मांड़ि॥ सकल विपिन को मांड़ि तहू परखोज न पावें। हे प्रीतमनँदलाल अर्ज यह तुमहिं सुनावें॥ वेगि मिलो वृजराज दर्श देवहु सुख पोहन। धरि अधरनपर मुरलि फूंकिदेव हे मनमोहन॥

छन्द॥

दुःख विनाश कहावो। तुम बिन हम दुख पावों॥ वेगि मिलो घनश्यामा। हम सब व्याकुल बामा॥ अर्द्धनिशा उजियारी। कैसे परे कलभारी॥ अतिहि सतावेकामा। भे वैरिनि निशि यामा॥

कवित्त॥

प्यारे तिहारे लिये हमआजुहि हेरिसकल बनदुःख लईहैं। चन्द्रसो आनन सूखिगयो अरु कुमुदुनिसीकुम्हिलाइ गई हैं॥ दुःख कह्योनहिंजातहै प्रीतम जो य दशा मोहिं आजु भईहैं। और कहांलों बखान करों प्रभु नैननसों सरिता उमईहैं॥

दो॰ यहिविधि बहुव्याकुलभई जबसबवृजकीबाम।
धरिनसकीं धीरजकळू प्रगट्यो तबघनश्याम॥

सो॰ धायमिलींवृजबाल लियो अङ्कभरिश्यामको।
भयोहर्ष त्यहि काल ज्योंजलमीनहिंकोमिले॥
गयो दुःख को भार बाजन लगी मृदङ्गडफ।
उमग्यो काम अपार लगीं केलिबनिताकरन॥

दो॰ तासु समय के रासको को करिसकै बखान।
सहसानन वर्णत थक्यो मैं बपुरोका जान॥

धन्यधन्य वृज युवतिको धन्य कृष्ण सुखदान।
धन्य देवकी मातुको जिन जाये भगवान॥
धन्यधन्य वृन्दावनहिं धन्य वृजबासी बाल।
धन्य राधिका जासुसँग बिहरे मदनगोपाल॥
इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णविहारीशुक्लबदकी
निवासिबिरचितेरासलीलावर्णनोनाम
अष्टमअंशः॥ ८॥

सो०करें केलि नँदनंद देखि मातु सुख पावहीं।
आठौयाम अनंद रहें पेखि छवि श्यामकी॥
दो०यकदिनभूषण साजि निशि गे ललिताकेधाम।
देखन लगे चरित्रतहँ छिपकर श्रीघनश्याम॥
सो०ललिताकियोविचार आवनकोनिशिप्राणप्रिय।
मोसों कियो करार आज श्याम घर आइहैं॥
चौ० अस जियजानि बाम हर्षाई। मलि उबटन पुनिशीघ्र नहाई॥ पहिरि आभरण सुगँध लगाई। लैकर मुकुर केश गुँधवाई॥ बेंदियाभाल बांधि नथपहिरे। तामें मोती परे सुनहरे॥ गरेहमेल लियो बँधवाई। सात लाखकी जेहि बनवाई॥ बाजूबंद बांक भुज कसिकै। टड़िया बाँधिलियो मुद लहिकै॥ पहिर्यो कड़ा छड़ा पकपाना। पायँन में नहिं जाय बखाना॥ नखशिख भूषण साजि सुग्वारी। कुसुम रंगकी ओढ़्यो सारी॥ पुनि उठि सेज सवांरि बिछाई। गुंधि गुंधि फूल बिचित्र बनाई॥ लै आरसी बिम्बतन हेरे। शोचैकब ऐहैं प्रभु मेरे॥ क्षण भीतर क्षण बाहर आवै। क्षणक बैठि क्षण फिरि उठि धावै॥ आये नाहिं अबतक घनश्यामा। अस

कहि शोचै हिय श्रति बामा ॥ की गे सोय जानि निशि प्यारे। की रोंक्यो है नंद बबारे ॥ कीगे प्रभु चंद्रावलि धामा। आयो नहिं निशि बीतीयामा ॥ असजियशोचि कछुक दुख पावै। पुनि कछु शोचि बहुत हर्षावै ॥

दो॰ देखि चरित अस सांवरो भयेमग्न सबगात।
केहिबिधिपकरौंबामको असजियजानिलजात॥

सो॰ बाढ़्यो काम अपार धरि न सके धीरज कछू।
बिहँसेनन्दकुमार धायमिलेसखिप्यार सों ॥

चौ॰ लियोअंक भरित्यहि गिरिधारी। ग्वालिनि की सब तपनिनिवारी॥ अति आनन्दकियो तब बाला। हिय लपटाय नंदको लाला ॥ बोली प्रिया बहुरि मुसकाई। कछुक हर्षिकर वचन बनाई ॥ हौतुम श्याम अतिहिअलसाने। चंचल नयनकंज कुम्हिलाने॥ बारबार तुम लेहु जँभाई। हौ उदास अति कुवँरकन्हाई ॥ सो कारण तुम्हार हमजाना। पैतुम निजमुखकरौ बखाना। हँसि बोले तब कृष्णबिहारी। सुनु ललिता प्राणनसों प्यारी ॥ गये आजुहम गायचरावन। ग्वालबाल सँग लैगहवरवन ॥ तहांएक आयो भटभारी। नामबकासुर अतिभयकारी॥ कंसनृपतिने ताहि पठावा। धरि बकरूप चोंच फैलावा ॥ लियो गउनको लीलि सुरारी। तब हम देखि क्रोध विस्तारी॥ फारि चोंच राक्षसबध कीन्हा। प्राणपठाय यमपुरी दीन्हा॥ अतिश्रमभयो तासुके मारन। पुनि सबमिलि आयेवृन्दावन॥ श्रमवश गयासोय सुनु ग्वारी ॥ रही न आवन की सुधि प्यारी ॥ औचक एक बिलारी आयो। उछलि ताख से मटुकि गिरायो ॥ भयो

शब्द अति ताकोग्वारी। जागिपस्योंमें नींदबिसारी॥

दो० आइगई सुधि मोहिंको प्यारीमिलनतुम्हारि।
हरबराय उठिचलि भयों काची नींदबिसारि॥

सो० हों आलसमें ताहि नैन अरुणहैं ताहिसे।
बारबार जमुहाहि और नहीं कछु भेद है॥

चौ० मानहुँ सत्य सत्य तुमग्वारी। और नहींकुछ भेद पियारी॥ सुनिललिता उरलिय लपटाई। जानति हौं मैं सब प्रभुताई॥ परम चतुरहैं आप कन्हाई। नहिं तुम मोसों बात बनाई॥ बहुरिश्याम मुखचुम्बनकीन्हा। अतिआनंद ग्वालि को दीन्हा॥

छंद हरिगीतिका॥

त्यहि समय श्री वृषभान तनया राधिका आवत भई। साजि अंग आभूषण सुखारी आभरणछादितठई॥ चन्द्रवदनी खंजनयनी केहरी कटि शुभ बनी। उरोज देखत कंज लाजें पिकवयनि गजगामिनी॥

दो० देखत राधाको वदन सकुचे नंदकुमार।
ललिता अति शर्मित भई आलीरूप निहार॥
बोली राधा विहँसि कर ललितासों ये बैन।
आजुश्याम आयेयहां किस कारण सुखदैन॥
तब ललिता सकुचाय बोली राधासों वचन।
आली मूड़ पिराय भारन आये नँदसुवन॥

चौ० पैनाहीं कछु अच्छोहोवै। जस प्रभुझारे तसहि पिरोवै॥ देखत तोहिं मिटी कछुपीरा। क्रमक्रम घटै बढ़ै नहिं वीरा॥ वैठिजाहु शय्या सुकुमारी। ममजीवन

आई तुमप्यारी॥ बोली तबराधा मुसकाई। ललितासों
ये वैन सुनाई॥

सवैया॥

बैठेहैं श्याम अलीपर्य्यंकपैजादू पढ़े बहुमंत्र जनैया।
टोना व टंबर जानत हैं बहुयंत्रन तंत्रन के अधिकैया॥
रेखा सबै पहिंचानतहैं अरु मोहत हैं वशिकर्न करैया। हैं
सबबुद्धि उजागरमोहन बैठिहों ना प्यारी प्यारेकिशय्या॥

सो॰ सुनतवचन नँदलाल बोले राधासों विहँसि।
क्यों मदमाती बाल म्वहिं तान्त्री बतावही॥

चौ॰ कबमैं तुमपर जादू डारी। कीन्हयों वशि त्वहिं
राधा प्यारी॥ दे बतलाय एक व्रजगोरी। ज्यहि पर
डारी होइ ठगोरी॥ नाहक दोष लगावो प्यारी। कहि
झूठ वचन बढ़ावोरारी॥ हैत्वहि रूपक अधिक गुमाना।
सो प्यारी निश्चय हम जाना॥ हैं बहुतिक मेरे व्रज
बाला। एकसे एक रूपकीआला॥ रमिहों तिनसे चित्त
लगाई। प्यारी तेरी सुर्तिभुलाई॥

दो॰ सुनत वचन वृजचन्दके राधागई रिसाय।
आई अपने भवनमें कान्हैं वदन दिखाय॥

सो॰ गये कृष्ण मुरझाय बोले ललितासों वचन।
राधा गै अनखाय अब प्यारी कैसी करों॥

दो॰ मैंनहिंकछु ताकोकह्यों येरी ललिताप्यारि।
म्वहिं बिसारि राधागई नैननसैंनै मारि॥

सवैया॥

हे म्वहिं प्राणन सों अतिप्यारि पियारी कहां गई
मोहिं विसारी। ज्यों बिन वारिके मीन बिचारि परीतलफै

तसहौं सुकुमारी ॥ हे गजगामिनि चन्द्रसोंआननिहौं अतिदुःखित मैं बिनप्यारी। वेगिमिलाव प्रिया ललिता शशिरूपकसों वृषभानुकुमारी ॥

दो० भे अचैन नँदलाल अति बाढ़्यो कामअगाध।
राधा राधा रट लगी राधा राधा राध ॥

सो० हे राधा सुकुमारि छोड़ि मोहिं तू कितगई।
प्राणनसोंअतिप्यारिमिलहुप्रियामोहिंहर्षिकर ॥

दो० येरी राधा लाड़िली श्रीवृषभानुकुमारि।
मम नैननकी पूतली कहां गई सुकुमारि ॥

छं० येरी श्यामा। बाढ़्यो कामा॥ आवो प्यारी। क्रोध बिसारी ॥

दो० ये ललिता मन मोहिनी जीवन राधा मोरि।
नहिंआवैसखि क्याकरों तू लावो करजोरि ॥
सुनतवचनललितासखी श्यामैबहुसमुझाय।
राधा ढिग जाकर अली बोली बैन सुनाय ॥

सवैया ॥

तोहिं बुलावत हैं नँदनन्दन आलि चलौ सब शोच विहायकै। हैं अतिश्याम तुम्हैं बिन व्याकुल धायमिलौ तिनसों लपटायकै॥ रोष कहाकरती सजनी इतनो घन श्यामसों वैर बढ़ायकै। केलि कुतूहल कोकरिप्यारि वि-हारि मिलौ शुभनैन देखायकै ॥

दो० सुनत वचन राधाहँसी बोली वचन सुनाय।
मैं नहिं चलिहों ऐसखी जहँहैं कुंवर कन्हाय ॥
मोर कियो अपमान नाहक प्यारी कृष्णप्रभु।

जोनहिं बनैबखान तिनकी प्रीतिप्रतीतिनहिं ॥

चौ० पुनि समुझायो ललिता ग्वारी। चलोरोषतजि राधाप्यारी ॥ हैं अतिदुखी उदास कन्हाई। जो तुम बिनमो वरणि न जाई ॥ तिनसों मिलौ सखी हर्षाई। भरि अङ्कम सब वैर विहाई ॥ पुनि बोली राधा सुनुग्वारी। नाहक बात बढ़ावो प्यारी ॥ जे कमरी के ओढ़नवारे। हमरी गाय चरावन हारे ॥ नित उठि दुहैं हमारी गैयां। तिनसों प्रीति न बनत बनैयां ॥ जायकहो प्यारी अहीर सों। आई ना राधा तुतीरसों ॥ कियोमोर तुम अति अपँमाना। जो मोसों नहिं जाय बखाना ॥

दो० असकहिराधा चुपरही पुनि ललिता अनखाय।
बहुत मानियो प्रियाको श्रीगिरिधर गुणगाय ॥

सो० जब नहिं मान्योनेक चलीरोषकरि श्यामपहँ।
बोली वचन सटेक सुनहु पियारे प्राणपति ॥

दो० मैं समुझायों प्रियाको बहु तुम्हार गुणगाय।
वहनहिंआवै धाम मम बहुरि मोहिं अनखाय ॥

सो० आपुहि लेव मनाय जाय त्वरित वृषभानुपुर।
देखत तुम्हें कन्हाय मिली धाय राधा प्रिया ॥

चौ० सुनत श्याम अति विरह बढ़ाई। आय भवन सोये सुखदाई ॥ विगत रैनिउठि प्रभुहर्षाई। धस्यो जनाना वेष स्वहाई ॥ कीनखाब को लहँगा पहिरी। जरीकाम की ओढ़्यो चुनरी ॥ चोली पहिरिलियो बँद कसिकै। गेंद बनाय पहलको भरिकै ॥ नखशिखभूषण साजि कन्हाई। लैजोड़ा चूरिन सुखदाई ॥ चलेश्याम वृषभानु पुराको। धरे मड़ टुकनी जोर वाको ॥ जहँ रा-

धाका मंदिरआही। तौन गैलनिकसे पुरमाही ॥ देखि सखिन को रूप मुरारी। जे राधाकी थीं हितकारी ॥ बोले तिनसों वचन बनाई। अतिहि नम्रके कुंवर कन्हाई ॥

दो० चुरिया केऊ लेउगी अति उत्तम हैं जोर।
भांति भांति माणिकजड़े मुक्ता लगे बहोर॥
हरी सुनहरी आदिरँग श्यामरंग मनलोल।
जो लेवो कोई सखी देउँ बताय त्यहि मोल॥

चौ० सुनत वचन सब सखि हर्षाई। बोलीं मृदुल वचन सुखदाई ॥ हम चूरी नहिं लेब पियारी। पै यक बात कहों चुरिहारी ॥ यहां बसत यक राधा ग्वारी। है वृषभानुसुता सुनु प्यारी ॥ लेई वह चूरी बहुजोरा। बेलमि जाव तनु तुम यहि ठोरा॥ देवैं तासों खबरि जनाई। लौटि आय त्वहिं चलों लेवाई ॥ असकहि एक सखी उठिधाई। गै राधा ढिग हर्ष बढ़ाई॥ बोली वचन प्यार सों सनिकै। राधा सों यह हँसि हँसि कहिकै॥ आई एक आजु चुरिहारी। अतिहि स्वरूपवान सुनु प्यारी ॥ लिये जोर चूरिनको करमें। है बेंचति प्यारी यहि गलमें ॥ आज्ञा होय ताहिलै आवों। या चूरी लै तोहिं देखावों ॥ बोलीराधा सुनु सुकुमारी। वेगि बुलाय लाव चुरिहारी ॥ सुनत वचन सखि उठि हर्षाई। चुरिहारिनि को लियो बुलाई ॥ देखि रूप राधा मुसकाई। बोली हँसिकर वैन सुनाई ॥ कहँसे आई है तू प्यारी। कौन नामहै तेरा ग्वारी॥ देख्यों कबहुंन तोहिं पियारी। कहां कि तूहै रहनेहारी ॥ हँसिबोले तब गिरिवरधारी। ग्राम हमार गोकुला प्यारी॥ नाम हमार हवै मनमो-

हनि। बेंचौं चूरी हे सुखपोहनि ॥ जो लेवो तुम राधा प्यारी। खोलि देखावों चूरी सारी ॥

दो० भांति भांतिके जोरहैं हरी श्यामता आदि।
तिनके बिचबिचजड़ेहैं बहु मोलन मुक्तादि ॥
जो प्यारी मनभावही लेवो जोर निहारि।
अतिहिस्वहावनजोरहैं त्वहिंलायकसुकुमारि ॥

चौ० असकहि खोलि दियो देखराई। सब जोरन को मोल बताई ॥ एक सहाना देखत जोरा। बोलीराधा हरिकी ओरा ॥ याको मोल देहु बतलाई। है यह मम प्रसन्न बहुताई ॥ हँसि बोले सुनु मेरी प्यारी। याको मोल बहुतहै भारी ॥ सात अर्बकी यहहै ज्वारी। तुम्हरे लायक नाहिं सुकुमारी ॥ हरी पांति यामें नग सच्चे। मोती मूंगाहैं नहिं कच्चे ॥ बोली राधा सुनु चुरिहारी। कैसी बातकहौ तू ग्वारी॥ डारे पहिरि अनगिने ज्वारी। एकते एक सरिस सुकुमारी। नकली जोड़ा मोहिंदेखा-वो। सात अर्ब कीमत बतलावो ॥ मैं नाहिं लेहौं ऐसो जोरा। बेंचहु जाय ग्राम तुम औरा ॥

दो० सुनतवचनअतिक्रोधकर बोलेकान्हरिसाय।
टकहिलज्वारापहिरिकै बातै कस बतिलाय ॥

कबित्त ॥

इन्द्रके गेह दरख्त जम्यो यक पीपर को सुनु ऐ सु-कुमारी। ताकी लाख निकारि बधूटिन जोर रच्यो अति युक्ति पसारी॥ बीचनमें बहु रत्नजड़े अरु हीरनकीत्यहि टोन सुधारी। त्यहि जोरको प्यारी कहौ नकली ज्यहि सप्तम अर्ब कि कीमत ग्वारी ॥

चौ० बोली राधा सुनु चुरिहारी। हमने कियो हँसौवा ग्वारी॥ है बहुनीक जोर तुव प्यारी। देपहिराय हमें चुरिहारी॥ सुनि हँसि पकरयो बांह मुरारी। तब राधा जान्यो गिरिधारी॥ हैं ये चञ्चल श्याम सयाने। सब अँगहैं इनके मर्दाने॥ मेरे काज धरयो यह बाना। चुरिहारिनको रूप जनाना॥ असकहि बस्तर लियो निकारी। भे लज्जित अतिकृष्णविहारी॥ कियो हँसौवा राधा ग्वारी। सब सखियन मिल दैंदै तारी॥ बढ़ी प्रीति कछु वरणि न जाई। भेअनंद अति कुँवरकन्हाई॥ करिलीला आये घर कान्हा। नितनव लीलाकरैं सुजान्हा॥ कृष्ण राधिका की यह लीला। जो कोउ पढ़िहैं सुजन सुशीला॥ अति अनंद लहिहैं महिमाहीं। अंत स्वर्ग त्यहि दुर्ल्लभ नाहीं॥

दो० जै राधा जै गोपिका जै श्रीनंदकुमार।
जैवृंदावन पुर जहां कान्हाकरैं विहार॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णविहारीशुक्लबदर्का
निवासिविरचितेचुरिहारिनलीला
वर्णनोनामनवमोऽध्यायः॥ ९॥

सो० पुनिप्रभुकियोविचार बाढ़ेदैत्यअपार भुव।
करौंतिन्हें संहार जेहिकारणअवतारलिय॥

चौ० यहां कंसअति करै अनीती। त्रासैं प्रजाधरा को जीती॥ मथुरा जाय ताहि प्रभु मारा। सकल सेन राक्षसी सँहारा॥ उग्रसेन कहँ गद्दी दीन्हा। अतुल हर्ष पुरवासिन कीन्हा॥ बहुरि मिले प्रभु पितुसों जाई। मिले मातुसों अति हर्षाई॥ फिरि प्रभुरहे द्वारकाजाई।

जेहि विश्वकर्मा नई बनाई ॥ सहित मातुपितु अरु बड़ भाई । उग्रसेन को नृपति बनाई ॥ कियो दुष्ट बिन धरा सुखारी । हर्यो भार धरती को भारी ॥ भे मुनिगण सब आनँद पागे । भई प्रजा सब सुखित स्वभागे ॥ सूक्ष्म कह्यो में ताको गाई । नहिं विस्तार होत अधिकाई ॥ पढ़ौ सुजन याको चित धरिकै । नंदनँदन को सुमिरण करिकै ॥ जासों मुक्ति मिलेकी आशा । सर्व पापको होय विनाशा ॥ अंतबसौ हरिपुर में जाई । यासों भक्ति करो सुखदाई ॥

दो०बहुरि कहौं अवतार जो होई आगे आय ।
जब कलियुगके अंतमें म्लेच्छामयी लखाय ॥

चौ० ह्वैहै धर्म कर्मकी हानी । बढ़ी अधर्म न जाय बखानी ॥ करिहैं विप्र शूद्रका कर्म । शूद्र लहेंगे द्विजका धर्म ॥ चारो वर्ण एकही ह्वै हैं । मानुषको मानुष तब खैंहैं ॥ ह्वै म्लेच्छ जाई संसारा । बाढ़ी क्रोध पखंड अपारा ॥ मेघ वृष्टि करिहैं बहुथोरी ह्वैहैं उल्कापात बहोरी ॥ मरिहैं प्रजा अन्नके दुक्खा । सपने मिली न कबहूं सुक्खा ॥ निंदिहैं द्विज वेदन का भाई । तपिहैं सप्तसूर्य्य हरषाई ॥ सप्त वर्षकी कन्या जौन । करिहै बालक उतपन तौन ॥ ह्वैहैं व्यभिचारिणि अति नारि । मिलिहैं आनसे निजपति मारि ॥ यहिविधि जब होइहैं उत्पात । बालक करी पितापर घात ॥ तबहोई कलङ्कि अवतार । धरिहैं विष्णु प्रजा हितकार ॥ संभर मुरादाबाद बखान । तहँ देवशर्मा विप्र सुजान ॥ ताकी कन्या क्वारी जौन । होइकलंकि वाहीते तौन ॥ तबप्रभु ह्वैकै अश्व स-

वार॥ करिहैं म्लेच्छ वंश संहार॥ थपिहैं द्विजका धर्म बढ़ाय। सब अधर्मको नाश कराय॥ लागी तब सतयुग हर्षाय। रही चैन दुनिया में छाय। वर्ण्यौंताको मैं कछु सार। हिये सुमिरि श्रीनंदकुमार॥ करहुपान याको बुध लोग। है यह पान करन के योग॥

दो॰ पढ़िहैंजो चितलायकर हियेहर्षि धरिध्यान।
सकलसिद्धि तेहि देहिंगे कृपासिंधुभगवान॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणेकृष्णविहारीशुक्लबदर्कानिवासिविरचितेकलङ्कीअवतारकथावर्णनोनामदशमोऽशः १०॥

छन्दहरिगीतिका॥

निज मत्यनुसार सो यहि बनायो ज्ञानभूषण नाम सों। करि युक्त भूतभविष्य अरु सम भेद दण्डरु दाम सों॥ पुनि वर्ण चारिहु केरकर्म सो जौन करि गति पावहीं। कियो युक्त जो कुछ भूल चूक सो पढ़ि सुजान बनावहीं॥ नन्द अग्निरुद्वीप चन्द्र मिलाय संवत जानिये। शुचि माघमासरु कृष्णपक्षसु शुक्रवासर मानिये॥ बद्रिका ग्राम निवासि कृष्णविहारि यह पुस्तक रच्यो। शुभ छंदबंध प्रबन्ध सो निर्द्वंद ह्वै यहि रच पच्यो॥

दोवैछन्द

सुरसरि तट मम ग्राम मनोहर विप्र वृन्दको बासा।
सुकुलवंश अवतंस नाममम कृष्णविहारि प्रकासा॥
पुरी बद्रिका है प्रसिद्ध अति ग्राम मोर को नामू।
परगन हड़हा अवधदेश शुभ ज़िला कहत उन्नामू॥

इतिश्रीज्ञानआभूषणद्वितीयखण्डसमाप्तंशुभमस्तु॥

इति॥